8 वैश्वीकरण का भारतीय समाज पर प्रभाव (Impact of Globalization on Indian Society)

आर्थिक सुधारों की प्रक्रिया में भारत ने वैश्वीकरण के जिस रास्ते को चुना उसका भारतीय समाज पर व्यापक प्रभाव पड़ा। भारतीय समाज के विभिन्न क्षेत्रों पर पड़ने वाले इसके प्रभाव को हम निम्न रूप से समझ सकते हैं:-

ग्रामीण समाज पर वैश्वीकरण के प्रभाव (Effects of Globalization on Rural Society)

भारत में धर्म प्रधान, कृषि अर्थव्यवस्था प्रधान, जाति प्रधान एवं नातेदारी संबंधों (Kinship Relationship) की प्रधानता वाले समाज को ग्रामीण समाज की संज्ञा दी जाती है। यहाँ प्रदत्त प्रस्थिति (Ascribed Status) को महत्व प्राप्त होता रहा है तथा प्रथा एवं परम्परा द्वारा लोगों की गतिविधियों को नियंत्रित किया जाता रहा है।

वैश्वीकरण का भारतीय ग्रामीण समाज पर प्रभावों के विश्लेषण हेतु वैश्वीकरण से पूर्व भारतीय ग्रामीण समाज की स्थिति की चर्चा आवश्यक हो जाती है। अंग्रेजी शासन काल के पूर्व भारत का ग्रामीण समाज अपने परंपरागत रूप में विद्यमान था। अंग्रेजी शासन काल में अंग्रेजों की अहस्तक्षेप की नीति के कारण ग्रामीण समाज में कोई विशेष परिवर्तन नहीं आया। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् लोकतांत्रिक राजनीतिक व्यवस्था की स्थापना हुई और राज्य के द्वारा आधुनिक विकसित लोकतांत्रिक समाज के निर्माण का लक्ष्य रखा गया और इस दिशा में संविधान कानून एवं विकास योजनाओं के माध्यम से प्रयास प्रारम्भ किए गए। 1991 से पूर्व तक सरकार के प्रयासों द्वारा ग्रामीण समाज के आधुनिकीकरण की प्रक्रिया प्रारम्भ हुई परन्तु अभी तक यह आधुनिक ग्रामीण समाज के निर्माण के लक्ष्य से काफी दूर है।

वैश्वीकरण ने भारतीय ग्रामीण समाज को व्यापक रूप से प्रभावित किया है। इसके सकारात्मक प्रभावों को हम निम्न रूप में चर्चा कर सकते हैं:–

वैश्वीकरण के प्रभावस्वरूप खुली वैश्विक अर्थव्यवस्था (Open Global Economy) का विकास हुआ इससे उन्नत बीज, खाद, कृषि उपकरण आदि का आयात सुविधाजनक हो गया फलत: कृषि उत्पादन में वृद्धि हुई एवं ग्रामीण समाज का आर्थिक विकास हुआ।

वैश्वीकरण के प्रभावस्वरूप प्रत्यक्ष विदेशी निवेश के अन्त:प्रवाह (Under Flow) में वृद्धि हुई, जिसका उपयोग कर कृषि संबंधी आधारभूत संरचनाओं के विकास में तीव्रता आयी, जिससे कृषि का आधुनिकीकरण हुआ एवं उत्पादकता में वृद्धि हुई फलत: ग्रामीण समाज में समृद्धि आई।

वैश्वीकरण के प्रभाव स्वरूप गाँवों में अवस्थित लघु एवं कुटीर उद्योगों के उत्पादों को वैश्विक बाजार उपलब्ध हुआ। फलत: इस उद्योग से सम्बन्धित लोगों की आय में वृद्धि हुई तथा इस क्रम में ग्रामीण समाज में समृद्धि आयी। वैश्वीकरण के प्रभाव स्वरूप उद्योग एवं सेवा क्षेत्र का विस्तार हुआ तथा रोजगार के नए अवसरों में वृद्धि हुई। इन अवसरों को ग्रामीण युवा वर्ग ने भी लाभ उठाया। फलत: ग्रामीण गरीबी एवं बेरोजगारी में कमी आयी।

वैश्वीकरण के प्रभावस्वरूप FDI के अन्त:प्रवाह में तेजी आयी तथा ढेर सारे Single and Multibrand Retail Stores की स्थापना की दिशा में प्रयास हुआ। सरकार द्वारा यह प्रावधान किया गया है कि इन Store में एक निश्चित सीमा तक (30%) लघु-कुटीर उद्योगों से उत्पादों की खरीद अनिवार्य होगी। फलत: लघु व कुटीर उद्योगों की संवृद्धि एवं सुरक्षा का मार्ग प्रशस्त हुआ जिससे ग्रामीण समाज को भी लाभ प्राप्त हुआ।

वैश्वीकरण के प्रभाव स्वरूप आधुनिक मूल्यों (Modern Values) एवं आधुनिक शिक्षा का ग्रामीण समाज तक प्रसार हुआ। फलत: ग्रामीण समाज में तार्किक एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास हुआ तथा अंधविश्वास व सामाजिक रूढ़ियाँ कमजोर हुई। वैश्वीकरण के प्रभाव स्वरूप शिक्षा एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण का प्रसार हुआ फलत: गाँव वालों की परम्परागत मानसिकता में बदलाव आया तथा उनका आर्थिक एवं राजनीतिक सशक्तिकरण हुआ।

वैश्वीकरण के प्रभाव स्वरूप तार्किक एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण का प्रसार हुआ फलत: धर्म के प्रभाव में कमी आयी एवं रोजगार के नवीन अवसरों का विकास हुआ। परिणामस्वरूप जाति व्यवस्था के धार्मिक एवं परंपरागत पक्ष कमजोर हुए तथा जजमानी व्यवस्था भी कमजोर हुई।

वैश्वीकरण ने ग्रामीण समाज में पश्चिमी मूल्यों एवं जीवन शैली का प्रसार किया जिससे विवाह सम्बन्धी नियम एवं निषेध कमजोर हुए तथा बाल विवाह, बहुविवाह, पर्दा प्रथा, दहेज प्रथा जैसी कुरीतियाँ भी कमजोर हुई। पश्चिमी लोकतांत्रिक मूल्यों के प्रसार होने से परिवार की शक्ति संरचना का भी लोकतांत्रिकरण हुआ है तथा मुखिया की सत्ता विकेन्द्रित हुई है एवं महिलाओं की स्थिति में सुधार हुआ है। वैश्वीकरण के प्रभाव स्वरूप बाजार अर्थव्यवस्था (Market Economy) एवं संचार क्रांति का प्रसार हुआ है। इसके प्रभाव में गाँव के स्थानीय संस्कृति का सार्वभौमिकरण (Universalization) हुआ है एवं उन्हें नवीन पहचान प्राप्त हुई है।

वैश्वीकरण के उपरोक्त सकारात्मक प्रभावों के साथ-साथ ग्रामीण समाज पर इसके कुछ नकारात्मक प्रभाव भी परिलक्षित हुए हैं, इसे हम निम्न रूपों में देख सकते हैं:–

वैश्वीकरण के प्रभावस्वरूप वैश्विक कंपनियों का प्रसार हुआ है। वैश्विक कंपनियों द्वारा Hybrid बीज, नए कीटनाशकों एवं आधुनिक मशीनों का प्रसार किया गया तथा किसानों द्वारा इनका वृहद स्तर पर प्रयोग किया जा रहा है। इनके वृहद् स्तर पर प्रयोग से ग्रामीण बेरोजगारी में वृद्धि हो रही है तथा सर्वहाराकरण (Proletarianization) की प्रक्रिया तीव्र हुई है तथा कृषि भूमि एवं पर्यावरण पर इसका विपरीत प्रभाव पड़ा है।

वैश्वीकरण के प्रभावस्वरूप पर्यावरण प्रदूषण की समस्या तीव्र हुई है। परिणामस्वरूप अम्लवर्षा, मानसून की अनिश्चितता, बाढ़ व सूखा जैसी समस्याओं में वृद्धि हुई है जिसका फसलों पर विपरीत प्रभाव पड़ा फलतः ग्रामीण अर्थव्यवस्था दुष्प्रभावित हुई है।

वैश्वीकरण ने आधुनिक कृषि का प्रसार कर कृषि लागत में वृद्धि की है जबकि ग्रामीण क्षेत्रों में अभी तक ऋण सुविधाओं का पर्याप्त विकास नहीं हो पाया है। फलतः किसानों द्वारा महाजन आदि से उच्च ब्याज दर पर ऋण लेकर निवेश किया जा रहा परन्तु मानसून की अनिश्चिता व उर्वरकों का असंतुलित प्रयोग आदि से कृषि उत्पादकता अनिश्चित हुई है फलतः विपरीत परिस्थितियों के कारण किसान आत्म हत्या में वृद्धि हुई है।

वैश्वीकरण के प्रभावस्वरूप लोक कल्याणकारी राज्य कमजोर हुआ है तथा लघु व कुटीर उद्योग एवं कृषि हेतु सब्सिडी में कटौती हुई है जबकि लघु कुटीर उद्योग व कृषि को वैश्विक प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ रहा है ऐसे में लघु कुटीर उद्योग व कृषि हतोत्साहित हुए है तथा ग्रामीण गरीबी में वृद्धि हुई है।

वैश्वीकरण के प्रभावस्वरूप FDI के अन्त:प्रवाह में वृद्धि हुई है तथा उद्योग व सेवा क्षेत्र का विकास हुआ है परन्तु यह मुख्यतः शहरी क्षेत्रों तक सीमित है और इसमें मुख्यतः कुशल श्रमिकों की माँग में वृद्धि हुई है। फलतः ग्रामीण क्षेत्र आर्थिक रूप से उपेक्षित हुए हैं तथा गाँवों के अकुशल श्रमिकों का सीमांतीकरण (Marginalization) हुआ है एवं ग्रामीण गरीबी में वृद्धि हुई है।

वैश्वीकरण के प्रभाव से पश्चिमी मूल्यों का प्रसार हुआ है तथा व्यक्तिवादिता (Individualism) में वृद्धि हुई है फलतः सामूहिकता की भावना का ह्रास हुआ है तथा धन के महत्व में वृद्धि हुई है। इससे ग्रामीण समाज में संघर्ष व तनाव में वृद्धि हुई है। इससे ग्रामीण समाज की परंपरागत समरसता कमजोर हुई है।

वैश्वीकरण ने उपभोक्तावादी एवं व्यक्तिवादी मूल्यों (Consumerist and Individualistic Values) का प्रसार किया है फलतः परिवार में संयुक्तता की भावना कमजोर हुई, परिवार के विघटन एवं बंटवारे में वृद्धि हुई है तथा गाँवों में भी विवाह -विच्छेद (Divorce) प्रारम्भ हो गया है। व्यक्तिवाद ने महत्वाकांक्षा में भी वृद्धि की है फलतः जातिगत प्रतिस्पर्धा तीव्र हुई है तथा जातीय तनाव व हिंसा में वृद्धि हुई है।

वैश्वीकरण ने पहचान के संकट को उत्पन्न किया है परिणामस्वरूप जातीय संरचना पुनः मजबूत हुई है तथा प्रतिष्ठा हत्या जैसी घटनाओं में वृद्धि हुई है एवं राजनीति में जाति की भूमिका में वृद्धि हुई है तथा जातीय तनाव व संघर्ष में वृद्धि हुई है। वैश्वीकरण ने लोक कल्याणकारी राज्य को कमजोर किया है तथा शिक्षा का निजीकरण व बाजारीकरण को बढ़ावा दिया है फलतः ग्रामीण समाज में शैक्षिक असमानता में वृद्धि हुई है तथा परंपरागत शिक्षा का ह्रास हुआ है।

वैश्वीकरण ने ग्रामीण समाज में भी आधुनिक एवं पश्चिमी जीवन शैली का प्रसार किया है। परिणामस्वरूप ग्रामीण समाज की परंपरागत संस्कृति संकट में पड़ गयी है तथा ग्रामीण समाज की सांस्कृतिक विविधता भी नष्ट हो रही है।

जनजातीय समुदाय पर वैश्वीकरण के प्रभाव (Effects of Globalization on Tribal Community)

भारत में जनजातीय समुदाय भारतीय समाज का वह पिछड़ा समुदाय है जो सामान्यतः जंगलों एवं पहाड़ों में निवास करता है, जिनका एक विशेष नाम होता है, एक विशिष्ट संस्कृति होती है, जो अंतर्विवाही (Endogamous) होते हैं तथा आर्थिक रूप से मुख्यतः जंगलों पर निर्भर होते हैं।

अंग्रेजी शासन काल में और मुख्य रूप से स्वतंत्रता के बाद उनका मुख्य समाज के साथ सम्पर्क हुआ और उनकी सामाजिक, आर्थिक व सांस्कृतिक सभ्यता कई रूपों में प्रभावित हुई परन्तु इन पर सर्वाधिक प्रभाव वैश्वीकरण का पड़ा है। वैश्वीकरण ने भारतीय जनजातीय समाज को कई रूपों में प्रभावित किया है। वैश्वीकरण का जनजातीय समाज पर सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों ही रूपों में प्रभाव पड़ा है। इसके सकारात्मक प्रभावों को हम निम्न रूपों में देख सकते हैं–

वैश्वीकरण के प्रभावस्वरूप जनजातीय क्षेत्रों में नवीन उद्योग-धन्धों का विकास हुआ, कई नवीन परियोजनाएँ प्रारम्भ हुई जिससे रोजगार के नए अवसरों का सृजन हुआ। इससे जनजातियों की बेरोजगारी में कमी आयी तथा जनजातियों की आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ। वैश्वीकरण के प्रभावस्वरूप जनजातीय क्षेत्रों में भी संचार क्रांति का प्रसार हुआ एवं उपभोक्तावादी संस्कृति (Culture of Consumerism) का विकास हुआ जिससे जनजातियों की महत्वाकांक्षा में वृद्धि हुई तथा उनके द्वारा अपनी स्थिति को सुधारने हेतु प्रयास तीव्र हुआ जिससे उनकी स्थिति में सुधार हुआ।

वैश्वीकरण के प्रभावस्वरूप वैश्विक लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु दबाव में वृद्धि हुई है। परिणामस्वरूप सरकार, NGO, अंतर्राष्ट्रीय संगठनों आदि के द्वारा जनजातीय विकास हेतु कई रूपों में प्रयास तीव्र हुआ है। इससे भारतीय जनजातियों की सामाजिक, आर्थिक एवं शैक्षिक स्थिति में सुधार हुआ है। वैश्वीकरण के प्रभाव स्वरूप पहचान के संकट में वृद्धि हुई है जिसके समाधान के क्रम में नृजातीय पहचान के तत्वों के महत्व में वृद्धि हुई तथा

नृजातीय तत्वों के आधार पर जनजातियों में संगठनों का विकास हुआ और जनजातीय आन्दोलनों में वृद्धि हुई फलत: राजनीतिक शक्ति का विकेंद्रीकरण हुआ और जनजातियों का राजनीतिक सशक्तिकरण (Political Empowerment) हुआ।

वैश्वीकरण के प्रभावस्वरूप संचार क्रांति एवं आधुनिक संस्कृति का प्रसार हुआ। फलत: जनजातियों में भी आधुनिक जीवनशैली के प्रचलन में वृद्धि हुई। वैश्वीकरण के प्रभाव स्वरूप आधुनिक शिक्षा एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण का जनजातियों में भी प्रसार हुआ फलत: इनके अंधविश्वासों एवं कुरितियों (Superstition and Eve-practices) में कमी आयी है। चिकित्सा के आधुनिक साधनों के प्रसार से इनके स्वास्थ्य स्तर में भी सुधार हुआ है। वैश्वीकरण ने जनजातीय समाज को नकारात्मक रूप में भी प्रभावित किया है। इसे हम निम्न रूपों में देख सकते हैं:–

वैश्वीकरण के प्रभाव स्वरूप लोक कल्याणकारी राज्य कमजोर हुआ है और निजीकरण में वृद्धि हुई है। इससे जनजातीय हितों की उपेक्षा हुई है तथा उनमें सामाजिक, आर्थिक व शैक्षिक असमानता में वृद्धि हुई है एवं जनजातीय समूहों का सीमान्तीकरण हुआ है फलत: उनका नगर की ओर प्रवास में वृद्धि हुई है, विभिन्न आन्दोलनों का उद्‌भव हुआ है एवं इनका नक्सलीकरण हुआ।

वैश्वीकरण ने निजीकरण को बढ़ावा दिया है तथा FDI के अन्त:प्रवाह में वृद्धि की है। इससे जनजातीय क्षेत्रों में औद्योगिकरण एवं विकास परियोजनाओं का निर्माण तीव्र हुआ। फलत: जनजातीय क्षेत्रों में प्राकृतिक संसाधनों के दोहन की गति तीव्र हुई। इससे जनजातियों को विस्थापित (Displaced) होना पड़ा है। जनजातीय विस्थापन के परिणामस्वरूप उनका सांस्कृतिक क्षरण हुआ तथा उनका समाज छिन्न-भिन्न हो गया। प्राकृतिक संसाधनों के दोहन ने अनेक पर्यावरणीय समस्याओं को भी जन्म दिया है।

वैश्वीकरण के प्रभाव स्वरूप जनजातीय क्षेत्रों में भी योग्यता एवं धन के महत्व में वृद्धि हुई फलत: समतामूलक जनजातीय समाजों में वर्ग-स्तरीकरण (Class Stratification) का विकास हुआ एवं असमानता में वृद्धि हुई।

वैश्वीकरण ने जनजातीय समाजों में भी उपभोक्तावादी संस्कृति का प्रसार कर भौतिक सुख सुविधा की होड़ पैदा की है जिससे इनमें महत्वाकांक्षा एवं प्रतिस्पर्धा में वृद्धि हुई है। उपयुक्त साधनों के अभाव के कारण इनके तुलनात्मक अभावबोध में वृद्धि हुई है। फलत: जनजातीय समाज में असंतोष, तनाव व कुंठा इत्यादि में वृद्धि हुई है एवं इनका अलगावादी व नक्सली गतिविधियों में संलिप्तता में वृद्धि हुई है।

वैश्वीकरण ने पहचान के संकट को उत्पन्न कर नृजातीय तत्वों के महत्व में वृद्धि की है फलत: विभिन्न नृजातीय आंदोलनों (Ethnic Movement) का उद्‌भव हुआ तथा इससे क्षेत्रवादी व अलगाववादी भावनाओं का प्रसार हुआ और सामाजिक आर्थिक विकास की प्रक्रियाएँ बाधित हुई।

वैश्वीकरण ने जनजातीय समाजों में पश्चिमी जीवनशैली का प्रसार किया है इससे जनजातीय समाज का सांस्कृतिक विघटन हुआ है तथा उनमें सामाजिक सांस्कृतिक सामंजस्य की समस्या उत्पन्न हुई है। वैश्वीकरण के प्रभावस्वरूप जनजातीय क्षेत्रों में पर्यटन स्थलों का विकास हुआ है और उनकी परंपराओं का बाजारीकरण हुआ है। बाजार की शक्तियों के द्वारा उनकी परंपराओं का विकृतिकरण (Distortion) हो रहा है तथा पर्यटकों के मनोरंजन के रूप में प्रयुक्त करते हुए जनजातीय संस्कृति का शोषण हुआ है। पर्यटकों के द्वारा उनकी निजता का हनन भी हो रहा है। उदाहरणस्वरूप हाल ही में अंडमान एवं निकोबार में जारवा जनजातियों के महिलाओं के अर्द्धनग्न तस्वीर लेकर पर्यटकों द्वारा इसके प्रसार की घटना को देखा जा सकता है।

भारतीय संस्कृति पर वैश्वीकरण के प्रभाव (Effects of Globalization on Indian Culture)

प्राचीन काल से ही भारतीय संस्कृति की समृद्ध एवं गौरवशाली परम्परा की वैश्विक स्तर पर अपनी विशिष्ट पहचान रही है। समय के साथ भारतीय संस्कृति के तत्वों में भी परिवर्तन आता रहा है परन्तु इसकी लोचशीलता के कारण इसकी निरन्तरता कायम है।

वैश्वीकरण के प्रभाव स्वरूप भारतीय संस्कृति में व्यापक परिवर्तन दृष्टिगोचर हो रहा है। वैश्वीकरण ने जहाँ कई क्षेत्रों में इसे सकारात्मक रूप में प्रभावित किया है वहीं कई क्षेत्रों में इसे नकारात्मक रूप में भी प्रभावित किया है। वैश्वीकरण का भारतीय संस्कृति पर पड़ने वाले सकारात्मक प्रभावों को हम निम्न रूपों में देख सकते हैं–

वैश्वीकरण ने संचार क्रांति का प्रसार किया है। इससे भारतीय संस्कृति एवं लोक कलाओं का सार्वभौमिकरण हुआ है एवं इनको वैश्विक स्तर पर नवीन पहचान प्राप्त हुई है। वैश्वीकरण के प्रभावस्वरूप वैश्विक स्तर पर रोजगार के नए अवसरों का विकास हुआ है तथा भारतीयों के अंतर्राष्ट्रीय प्रवास में वृद्धि हुई है। भारतीय लोग अपने साथ-साथ भारतीय संस्कृति को भी ले गए। इस प्रकार भारतीय संस्कृति का वैश्विक प्रसार हुआ है।

वैश्वीकरणजनित पहचान के संकट के समाधान के क्रम में परंपरागत संस्कृति को पुन: महत्व प्राप्त हुआ तथा लोक कलाओं के महत्व एवं प्रचलन में भी वृद्धि हुई। वैश्वीकरण के प्रभावस्वरूप भारतीय मध्यम वर्ग का प्रसार हुआ तथा उनमें आर्थिक संवृद्धि आयी। इससे लोक कलाओं से सम्बन्धित वस्तुओं के विक्रय में वृद्धि हुई एवं इनका प्रसार हुआ।

वैश्वीकरण के प्रभावस्वरूप वैश्विक बाजार में खुलापन आया। भारतीय लोक कला अपनी विशिष्टताओं के कारण वैश्विक बाजार में अपनी पैठ बनाने में सफल रही फलत: इनका वैश्विक स्तर पर प्रसार हुआ। भारतीय संस्कृति पर वैश्वीकरण के उपरोक्त सकारात्मक प्रभावों के साथ-साथ इसके कुछ नकारात्मक प्रभाव भी दृष्टिगोचर हुए। जिसे हम निम्न रूपों में देख सकते हैं–

वैश्वीकरण के प्रभाव स्वरूप संचार क्रांति का विकास हुआ तथा पश्चिमी जीवन शैली का प्रसार हुआ। फलत: परंपरागत भारतीय संस्कृति संकट में पड़ गयी।

वैश्वीकरण ने बाजार अर्थव्यवस्था का विकास किया तथा उपभोक्तावादी संस्कृति का प्रसार किया फलत: मॉल संस्कृति का विकास हुआ एवं इनका तीव्र अंधानुकरण (Blind Fallow) प्रारम्भ हुआ जिससे परंपरागत संस्कृति विकृत हुई एवं अलगावित मानव का विकास हुआ।

वैश्वीकरण के प्रभावस्वरूप पश्चिमी संस्कृति का तीव्र प्रसार हुआ जिससे सांस्कृतिक समरूपता (Cultural Homogeneity) में वृद्धि हुई फलत: भारतीय सांस्कृतिक विविधता खतरे में पड़ गयी।

वैश्वीकरण के प्रभावस्वरूप संचार साधनों का तीव्र विकास हुआ तथा मनोरंजन के नवीन साधनों का विकास हुआ (TV, Internet, FM)। फलत: मनोरंजन के स्थानीय एवं देशी साधनों के महत्व में कमी आयी। वैश्वीकरण के प्रभाव स्वरूप बाजार अर्थव्यवस्था के प्रभाव में वृद्धि हुई जिससे भारतीय संस्कृति का बाजारीकरण हुआ और उसका मूलस्वरूप नष्ट होने लगा।

भारतीय धर्म पर वैश्वीकरण के प्रभाव
(Effects of Globalization on Indian Religion)

वैश्वीकरण का भारतीय धर्म पर प्रभाव के तार्किक विवेचन हेतु इसकी पूर्व स्थिति की चर्चा आवश्यक हो जाती है। परम्परागत रूप से भारत एक बहुधार्मिक (Multi Religious) समाज रहा है। यह विश्व के कई महान धर्मों की जन्म स्थली रहा है। यहाँ लगभग सभी धार्मिक समूहों में अलौकिक शक्ति के महत्व को प्रमुखता दी जाती रही है तथा भारत की परम्परागत मान्यताओं एवं रूढ़ियों (Traditional beliefs and Mores) को धर्म द्वारा समर्थन प्राप्त था।

परन्तु अंग्रेजों के आगमन व विशेषरूप से स्वतंत्रता के पश्चात् भारत में आधुनिकता के मूल्यों का प्रवेश हुआ जिससे यहाँ तार्किक तथा वैज्ञानिक दृष्टिकोण का प्रसार हुआ फलत: यहाँ धर्मनिरपेक्षीकरण की प्रक्रिया क्रियाशील हुई परिणामस्वरूप समाज के सभी क्षेत्रों से धर्म के अतार्किक एवं अवैज्ञानिक प्रभाव के उन्मूलन की प्रक्रिया प्रारम्भ हो गयी।

लेकिन वैश्वीकरण उपरोक्त परिवर्तन की प्रक्रिया में एक नया पड़ाव साबित हुआ तथा इसने भारतीय धर्मों में बहुआयामी परिवर्तन की प्रक्रिया प्रारम्भ की है। इसमें से कुछ परिवर्तनों को जहाँ सकारात्मक प्रभाव के रूप में देखा जा सकता है, वहीं कुछ परिवर्तनों को नकारात्मक प्रभाव की कोटि में रखा जा सकता है। हम सर्वप्रथम यहाँ वैश्वीकरण का भारतीय धर्म पर पड़ने वाले सकारात्मक प्रभावों से चर्चा प्रारम्भ करना चाहेंगे।

वैश्वीकरण ने विश्व के विभिन्न समाजों के मध्य अंत:क्रिया को तीव्र किया है फलत: विभिन्न धर्मों में भी अन्त:क्रिया बढ़ी है और विभिन्न धार्मिक समूहों को एक दूसरे को जानने का मौका मिला है परिणामस्वरूप विभिन्न धार्मिक समूहों के मध्य खाई कम हुई है और ये आपस में संगठित होकर मानव कल्याण की दिशा में कार्य कर रहे हैं। इसके उदाहरण स्वरूप विभिन्न धार्मिक समूहों का पर्यावरण से सम्बन्धित समस्याओं को लेकर एकजूट होने के रूप में देखा जा सकता है।

वैश्वीकरण ने संचार साधनों के विकास का मार्ग प्रशस्त किया है जिससे धर्म के प्रचार-प्रसार में भी तीव्रता आई है फलत: धार्मिक मान्यताओं को जन-जन तक पहुँचना भी सरल हो गया है। आज स्थानीय धार्मिक परंपराओं को वैश्विक स्वरूप प्राप्त हो रहा और उनकों एक नई पहचान प्राप्त हो रही है। उदाहरणस्वरूप करवाचौथ व छठ पूजा जैसे त्योहारों के प्रसार को देखा जा सकता है।

वैश्वीकरण ने प्रतिस्पर्धा में वृद्धि की है जिससे व्यक्तिवाद में वृद्धि हुई है जिससे पारिवारिक विघटन व एकाकीपन में वृद्धि हुई है परिणामस्वरूप व्यक्ति के तनाव व कुंठा में वृद्धि हुई है जिसको दूर करने के साधन के रूप में कल्ट व सेक्ट की संख्या में वृद्धि हुई है और धर्म की विविधता बढ़ी है। वैश्वीकरण ने तर्कवाद एवं विज्ञानवाद के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है जिससे धर्म का धर्मनिरपेक्षीकरण संभव हुआ है फलत: धर्म के अन्तर्गत असमानता व शोषण पर आधारित परंपरागत नियम व मान्यताएँ कमजोर हुई है और धर्म का स्वरूप समानता पर आधारित होता जा रहा है।

आधुनिकीकरण की प्रक्रिया में धर्म आधारित व्यावसायिक समूहों जैसे-पंडित, ज्योतिष, मौलवी आदि के महत्व में कमी आई थी परन्तु वैश्वीकरण की प्रक्रिया ने प्रतिस्पर्धा एवं तनाव को बढ़ाकर तथा धर्म को इन तनावों को दूर करने के साधन के रूप में प्रयुक्त करके धर्म के महत्व को बढ़ाया है। फलत: इन पंड़ित, ज्योतिष व मौलवी आदि का महत्व पुन: स्थापित हुआ है।

वैश्वीकरण की प्रक्रिया ने बाजार अर्थव्यवस्था को महत्वपूर्ण बना दिया है फलत: बाजार की शक्तियों ने धर्म को भी बाजार की वस्तु के रूप में प्रयुक्त कर धर्म का बाजारीकरण किया है, जिससे सामाजिक जीवन के सभी क्षेत्र में धर्म के प्रचलन में वृद्धि हुई है। बाजार की शक्तियाँ, आधुनिकीकरण की प्रक्रिया एवं विज्ञान के विकास ने धर्म एवं धार्मिक मान्यताओं की कठोरता को कम किया है और इसको अधिकाधिक रोचक व लोकप्रिय बनाने का प्रयास किया है फलत: लोगों द्वारा धार्मिक मान्यताओं का अनुसरण करना आसान हो गया है, जिससे धर्म के प्रचलन में पुन: वृद्धि हुई है।

वैश्वीकरण ने उपभोक्तावाद व व्यक्तिवाद को बढ़ावा दिया है जिससे प्रतिस्पर्धा, तनाव एवं कुंठा में वृद्धि हुई है। ऐसे में कुंठा एवं तनाव को दूर करने वाली संस्था के रूप में धर्म अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है फलत: धर्म के महत्व में पुन: वृद्धि हुई है।

वैश्वीकरण के दौर में राज्य की लोक कल्याणकारी एवं नियंत्रणकारी भूमिका में कमी आयी है। जबकि धार्मिक पुन:

प्रवर्तनवाद (Religious Revivalism) की प्रक्रिया के माध्यम से धर्म ने पुनः महत्व प्राप्त कर लिया है। आज धर्म आधारित नैतिकता के स्तर में वृद्धि हुई है साथ ही धर्म ने लोगों में जनकल्याण के कार्यों को करने की प्रेरणा भी जागृत की है फलतः सामाजिक नियंत्रण के साधन के रूप में एवं लोक कल्याणकारी राजा के विकल्प के रूप में धर्म के महत्व में वृद्धि हुई है।

वैश्वीकरण ने गतिशीलता (Mobility) को तीव्र कर व्यक्ति को अपने जमीन व परंपराओं से काटकर उनमें पहचान के संकट को उत्पन्न किया है और धर्म इस समस्या का एक महत्वपूर्ण समाधान बनकर उभरा है फलतः पहचान के संकट का समाधान करने के साधन के रूप में धर्म के महत्व में वृद्धि हुई है।

वैश्वीकरण की प्रक्रिया ने स्थानीय गतिशीलता को तीव्र किया है और लोगों को भिन्न-भिन्न समाजों में पहुँचा दिया है, जहाँ लोग सांस्कृतिक आधार पर दूसरों से अलग-थलग महसूस करते है, परन्तु यहाँ धर्म उनके एकाकीपन दूर करने के साधन के रूप में क्रियाशील होकर एक धार्मिक समूह के रूप में उन्हें एकीकृत किया है और उनमें अलगाव की भावना को दूर किया है। उदाहरणस्वरूप कनाडा में पंजाबी समूहों में एकीकरण के साधन के रूप में धर्म के महत्व को देखा जा सकता है।

वैश्वीकरण की इस प्रक्रिया ने धर्म के बाजारीकरण को प्रोत्साहित किया है और बाजार की शक्तियों ने धर्म के सकारात्मक पक्षों को उजागर करके इससे लाभ कमाने का प्रयास किया है जैसे-रामदेव द्वारा आयुर्वेद का प्रचार या रविशंकर द्वारा Art of Living का प्रचार फलतः मानव की भलाई करने वाली संस्था के रूप में धर्म के महत्व में वृद्धि हुई है।

उपरोक्त विवेचन वैश्वीकरण के धर्म पर सकारात्मक प्रभाव को स्पष्ट करते हैं परन्तु वैश्वीकरण ने धर्म पर नकारात्मक प्रभाव भी डाले हैं जिनकी चर्चा हम निम्न रूपों में कर सकते हैं-

यह तो स्पष्ट है कि वैश्वीकरण ने धर्म का बाजारीकरण कर इसे बाजार की वस्तु बना दिया है तथा बाजार की शक्तियों ने धर्म के परंपरागत स्वरूप को रूपांतरित (Transformed) कर दिया है इसके परिणामस्वरूप धर्म के मौलिक पक्ष कमजोर हुए है तथा इसके बाह्य आडंबर में वृद्धि हुई है।

आज बाजार की शक्तियाँ अपने फैलाव व लाभ हेतु धर्म को एक अस्त्र के रूप में प्रयोग कर रही है जिससे धर्म का महत्व बढ़ा है एवं इसके प्रचलन में वृद्धि हुई है परन्तु इसने धर्मनिरपेक्षीकरण की प्रक्रिया को बाधित किया है। वैश्वीकरण ने सामाजिक जीवन के सभी क्षेत्रों में धर्म के महत्व को बढ़ा दिया है, जिससे लोगों को धार्मिक आधार पर संगठित होने के प्रचलन में वृद्धि हुई है फलतः धार्मिक आधार पर होने वाले तनाव, संघर्ष आदि में वृद्धि हुई है और भारतीय समाज की समरसता कम हुई है।

वैश्वीकरण की प्रक्रिया ने विचारधारा के महत्व में कमी एवं पहचान संकट को उत्पन्न कर नृजातीय पहचान (Ethnic Identity) के तत्वों के महत्व में वृद्धि कर दी है फलतः राजनीतिक दलों के द्वारा राजनीतिक शक्ति प्राप्त करने हेतु लोगों को लामबंद करने के आधार के रूप में धर्म के प्रयोग में वृद्धि हुई है परिणामस्वरूप धर्म का राजनीतिकरण, धार्मिक रूढ़िवाद व सम्प्रदायवाद आदि में वृद्धि हुई है।

वैश्वीकरणजनित पहचान के संकट ने धर्म को पहचान कायम करने के साधन के रूप में महत्वपूर्ण बना दिया है और पहचान कायम करने के प्रयास में विभिन्न धार्मिक समूहों द्वारा धर्म के रूढ़िगत मान्यताओं को फिर से लागू करने का प्रयास किया जा रहा है, फलतः धर्म के अन्तर्गत परम्परागत मान्यताओं का प्रचलन फिर से बढ़ा है जो समाज के आधुनिकीकरण के मार्ग में बाधा साबित हो रहा है।

वैश्वीकरण ने धर्म के बाजारीकरण को संभव बनाकर धार्मिक आडंबर को बढ़ावा दिया है फलतः आज धर्म के आड़ में ढेर सारे बाबाओं एवं ज्योतिषियों का उद्भव हो रहा जो धर्म के नाम पर शोषण को बढ़ावा दे रहे हैं। उदाहरणस्वरूप अभी हाल ही में चर्चे में आए आसाराम बापू के प्रकरण को देख सकते हैं।

वैश्वीकरण के इस दौर में धर्म आज बाजार की शक्तियों से चालित हो रहा है तथा बाजार की शक्तियों ने धर्म में धन एवं चढ़ावा के महत्व को बढ़ा दिया है फलतः धर्म भी उच्च वर्ग की वस्तु बनकर रह गयी है और गरीब वर्ग धार्मिक स्तर पर भी हाशिए पर चला गया है।

वैश्वीकरण ने आर्थिक विषमता एवं वंचना में वृद्धि की है तथा वंचित समूह धार्मिक आधार पर स्वयं को संगठित करके अपने आर्थिक हितों को सिद्ध करने और वंचना को दूर करने की ओर प्रेरित हुए हैं, जिससे सम्प्रदायवाद व धार्मिक आतंकवाद की घटना में वृद्धि हुई है और भारतीय समाज की समरसता कमजोर हुई है।

भारतीय विवाह एवं परिवार व्यवस्था पर वैश्वीकरण के प्रभाव (Effects of Globalization on Indian Marriage and Family System)

वैश्वीकरण ने भारतीय समाज के प्रत्येक संस्थाओं को किसी न किसी रूप में प्रभावित किया है। विवाह एवं परिवार रूपी परंपरागत संस्था पर भी वैश्वीकरण का मिला-जुला प्रभाव रहा है। विवाह एवं परिवार पर वैश्वीकरण के सकारात्मक प्रभावों को हम निम्न रूपों में देख सकते हैं:-

वैश्वीकरण ने रोजगार के अवसर में वृद्धि की है फलतः व्यक्ति की आत्मनिर्भरता में वृद्धि हुई है एवं परिवार में मुखिया की सत्ता कमजोर हुई है। इससे जीवन साथी के चुनाव में लड़के लड़कियों के महत्व में वृद्धि हुई है। वैश्वीकरण के प्रभाव स्वरूप आधुनिक एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण का प्रसार हुआ। इससे परंपरागत मान्यताएँ एवं विवाह संबंधी निषेध कमजोर हुए साथ ही व्यक्ति की आत्मनिर्भरता एवं स्वतंत्रता में भी वृद्धि हुई। फलतः अंतरजातीय, सगोत्रीय एवं प्रेम विवाह के प्रचलन

में वृद्धि हुई है तथा विवाह के क्षेत्रीय विस्तार में भी वृद्धि हुई है। इसके साथ ही बाल विवाह, दहेज प्रथा इत्यादि कुरीतियों में भी कमी आयी है।

वैश्वीकरण ने संचार साधनों एवं विज्ञान व प्रौद्योगिकी का तीव्र विकास किया जिससे विवाह में आधुनिक तकनीकी का प्रयोग प्रारम्भ हुआ (shadi.com etc.)। इससे उपयुक्त वर-वधु की तलाश में आसानी हुई। वैश्वीकरण ने विवाह एवं परिवार पर उपरोक्त सकारात्मक प्रभावों के साथ-साथ इसे नकारात्मक रूप में भी प्रभावित किया है। इसे हम निम्न रूप में देख सकते है-

वैश्वीकरण के प्रभाव स्वरूप लोगों की महत्वकांक्षा और व्यक्तिवादिता में वृद्धि हुई है। परिणामस्वरूप परिवार की संयुक्तता की भावना कमजोर हुई, पारिवारिक विघटन (Family Disintegration) तीव्र हुआ तथा एकाकी परिवार की संख्या में वृद्धि हुई है।

वैश्वीकरण के प्रभावस्वरूप स्त्रियों की आत्मनिर्भरता, स्वतंत्रता व स्वच्छंदता में वृद्धि हुई है। इसके प्रतिक्रियास्वरूप पुरुषों के पितृसत्तात्मकता में भी वृद्धि हुई है। इससे स्त्री-पुरुषों के बीच टकराव में वृद्धि हुई है, फलतः विवाह विच्छेद की दर में वृद्धि हुई तथा क्रमिक एक विवाह, Serial Monogamy आदि का प्रचलन बढ़ा है।

वैश्वीकरण के प्रभावस्वरूप व्यक्ति की स्वतंत्रता में वृद्धि के साथ-साथ पश्चिमी संस्कृति का प्रसार हुआ इससे विवाह के नवीन स्वरूपों का प्रचलन हुआ, जैसे-समलैंगिक विवाह, लिव-इन-रिलेशनशिप, Single parent family आदि तथा यौन सम्बन्धों में खुलापन आया। वैश्वीकरण ने व्यक्ति की महत्वाकांक्षा व प्रतिस्पर्धा में वृद्धि कर उसकी व्यस्तता में वृद्धि कर दी है, फलतः बच्चों के पालन पोषण व सामाजीकरण तथा वृद्धों के देखभाल में परिवार की भूमिका में कमी आयी है।

भारतीय महिलाओं पर वैश्वीकरण के प्रभाव (Effects of Globalization on Indian Women)

भारतीय महिलाओं पर वैश्वीकरण के प्रभावों के तार्किक विवेचन हेतु वैश्वीकरण से पूर्व के काल में भारतीय महिलाओं की स्थिति एवं उनकी समस्याओं की चर्चा महत्वपूर्ण हो जाती है। भारत हमेशा से पितृसत्तात्मक (Patrialchal) सामाजिक व्यवस्था वाला समाज रहा है जहाँ महिलाओं की सामाजिक प्रस्थिति (Social Status) निम्न रही है। महिलाओं में शिक्षा का स्तर भी निम्न रहा है तथा इनमें राजनीतिक जागरूकता के अभाव के कारण इनकी राजनीतिक सहभागिता भी निम्न रही है। आर्थिक रूप से भी महिलाएँ अधिकत्तर पुरुषों पर निर्भर रही है तथा इनमें जागरूकता एवं स्वतंत्रता का भी अभाव रहा है।

अपनी निम्न सामाजिक, आर्थिक व राजनीतिक प्रस्थिति के कारण महिलाएँ विभिन्न समस्याओं से ग्रस्त रही है। इसमें पर्दा प्रथा, कम आयु में विवाह की समस्या, दहेज की समस्या, घरेलू हिंसा की समस्या व स्वास्थ्य से सम्बन्धित समस्याएँ प्रमुख हैं।

वैश्वीकरण ने समाज के हर वर्ग को व्यापक रूप से प्रभावित किया है व इस क्रम में भारतीय महिलाओं पर भी इसका व्यापक प्रभाव देखा जा सकता है। यह प्रभाव सकारात्मक व नकारात्मक दोनों रूप में दिखाई देता है। सर्वप्रथम हम भारतीय महिलाओं पर वैश्वीकरण के सकारात्मक प्रभावों की चर्चा करते हैं एवं इस क्रम में देखते हैं कि वैश्वीकरण के प्रभाव स्वरूप भारत में FDI के अंर्तप्रवाह में वृद्धि हुई जिससे विभिन्न प्रकार के उद्योगों एवं सेवा क्षेत्र के विकास में तीव्रता आई। फलतः योग्यता के आधार पर महिलाओं के लिए रोजगार के अवसर में वृद्धि हुई तथा महिलाओं के रोजगार भागीदारी में वृद्धि हुई। जिससे भारतीय महिलाओं का आर्थिक सशक्तिकरण हुआ।

वैश्वीकरण के प्रभाव स्वरूप संचार साधनों का तीव्र विकास हुआ एवं उपभोक्तावादी संस्कृति का प्रसार हुआ। फलतः महिलाओं की महत्वाकांक्षा में वृद्धि हुई एवं इनके द्वारा प्रस्थिति (Status) में सुधार हेतु प्रयास तीव्र हुए। परिणामस्वरूप महिलाओं की प्रस्थिति में सुधार हुआ।

वैश्वीकरण के प्रभावस्वरूप शिक्षा एवं संचार साधनों का विकास तीव्र हुआ जिसके माध्यम से आधुनिक विचारधाराओं का प्रसार हुआ। इससे तार्किक एवं वैज्ञानिक दृष्टि का विकास हुआ। फलतः महिलाओं द्वारा सामाजिक रूढ़ियों पर आधारित शोषण के विरोध में तीव्रता आई एवं नवीन महिला आन्दोलनों का उद्‌भव हुआ। परिणामस्वरूप महिलाओं से जुड़ी विभिन्न समस्याओं (पर्दा प्रथा, दहेज प्रथा, बाल विवाह, घरेलू हिंसा, भ्रूण हत्या आदि) में कमी आयी और महिलाओं की प्रस्थिति में सुधार आया।

वैश्वीकरण की प्रक्रिया में संचार माध्यम के विकास के साथ-साथ वैश्विक संस्कृति मुख्यतः पश्चिमी संस्कृति का प्रसार हुआ। भारतीय महिलाओं ने पश्चिमी संस्कृति का अनुकरण किया, परिणामस्वरूप इनकी जीवनशैली में बदलाव आया जैसे-पश्चिमी वेश-भूषा, प्रेम विवाह, अंतरजातीय विवाह, लिव-इन-रिलेशनशिप, वेलेंटाइन-डे, डिस्को जाना आदि।

वैश्वीकरण के प्रभावस्वरूप एक तरफ जहाँ गुणवत्तापूर्ण उच्च शिक्षा का प्रसार हुआ तो दूसरी तरफ महिलाओं में जागरूकता आयी जिससे महिलाओं का शैक्षिक उत्थान हुआ एवं इन्हें उच्च प्रतिष्ठित रोजगार की प्राप्ति हुई जिससे इनका आर्थिक एवं सामाजिक सशक्तिकरण हुआ।

वैश्वीकरण के प्रभावस्वरूप संचार क्रांति एवं शिक्षा आदि के प्रसार के द्वारा महिलाओं की जागरूकता में वृद्धि हुई। फलतः इनकी राजनीतिक सहभागिता में वृद्धि हुई। वैश्वीकरण ने भारतीय महिलाओं को नकारात्मक रूप से भी प्रभावित किया है। वैश्वीकरण का भारतीय महिलाओं पर पड़ने वाले नकारात्मक प्रभावों की चर्चा हम निम्न रूप में कर सकते हैं-

वैश्वीकरण ने उपभोक्तावादी संस्कृति का प्रसार किया तथा रोजगार के नए अवसरों में वृद्धि भी की है जिसने महिलाओं

की महत्वाकांक्षा में वृद्धि की है, फलतः पारिवारिक सम्बन्धों में तनाव, पारिवारिक कलह एवं तलाक की दर में वृद्धि हुई है।

वैश्वीकरण ने भौतिक जीवन शैली की ओर उन्मुखता में वृद्धि की है। बेहतर भौतिक सुख-सुविधाओं की प्राप्ति हेतु पति-पत्नी दोनों में नौकरी करने की प्रवृत्ति का विकास हुआ है जिससे महिलाओं का परिवार, पति एवं बच्चों से भावनात्मक एवं मानसिक दूरी बढ़ी है, फलतः पारिवारिक सामंजस्य की समस्या में वृद्धि हुई है।

वैश्वीकरण ने संचार साधनों का विकास किया है एवं उपभोक्तावादी पश्चिमी संस्कृति का प्रसार किया है। जिसको अपनाकर महिलाओं की स्वतंत्रता एवं स्वच्छन्दता में वृद्धि हुई है, फलतः महिलाओं की नैतिक एवं परम्परागत मानदण्डों (Traditional Standards) से विचलन में वृद्धि हुई है एवं अधिक उम्र में विवाह, प्रेम विवाह, लिव-इन-रिलेशनशिप, अविवाहित रहना, यौन संबंधों में खुलापन आदि प्रवृत्तियों का प्रसार हुआ है तथा स्वास्थ्य सम्बन्धी नवीन समस्याओं, जैसे-AIDS आदि का उद्भव हुआ है।

वैश्वीकरण के प्रभावस्वरूप भौतिकवादी संस्कृति (Materialistic Culture) का प्रसार हुआ है, परिणामस्वरूप महत्वाकांक्षा एवं प्रतिस्पर्धा में वृद्धि हुई है जिससे समय का अभाव हुआ है तथा महिलाएँ जीवन के मौलिक पक्षों से यहाँ तक कि अपने आप से भी अलगाव (Isolation) की समस्या का सामना कर रही है। वैश्वीकरण ने संचार साधनों का तीव्र विकास किया है, फलतः सिनेमा एवं धारावाहिकों के प्रति महिलाओं की उन्मुखता बढ़ी है। इसका महिलाओं के मनोवृत्ति पर दूषित प्रभाव पड़ा है तथा व्यक्तिवादी, स्वार्थी व कूटनीतिज्ञ, षडयंत्रकारी महिला व्यक्तित्व का विकास हुआ है।

वैश्वीकरण के प्रभावस्वरूप सेवा क्षेत्र का तीव्र विकास हुआ है तथा महिलाओं के लिए विभिन्न क्षेत्रों में रोजगार के नए अवसर उपलब्ध हुए है; परन्तु इसने महिलाओं के लिए रात्रि कार्य की संख्या में भी वृद्धि की है, फलतः कार्यस्थल पर महिलाओं के साथ दुर्व्यवहार एवं यौन शोषण, महिलाओं की सुरक्षा की समस्या तथा उनमें अनिद्रा, तनाव आदि स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याओं का उद्भव हुआ है।

वैश्वीकरण के प्रभावस्वरूप बाजार अर्थव्यवस्था का विकास हुआ है। बाजार की शक्तियों द्वारा अपने उत्पादों को बेचने की होड़ में वृद्धि हुई है। बाजार की शक्तियों के द्वारा अपने उत्पादों को बेचने के लिए महिलाओं का उपभोग की वस्तु के रूप में प्रयोग हो रहा है फलतः महिलाओं की गरिमा एवं प्रतिष्ठा का ह्रास हुआ है।

वैश्वीकरण के प्रभावस्वरूप मुख्यतः नगरों में FDI के अंतःप्रवाह में वृद्धि हुई है। इससे नगरों में रोजगार के नए अवसरों का सृजन हुआ है। रोजगार की प्राप्ति हेतु ग्रामीण एवं जनजातीय महिलाओं की नगरों की ओर प्रवास में वृद्धि हुई है। फलतः इन महिलाओं का अपने रिश्तेदारों एवं परिवार से अलगाव हुआ है एवं इनके सामाजिक संबंधों में बिखराव हुआ है।

वैश्वीकरण के प्रभावस्वरूप विज्ञान एवं तकनीकी का तीव्र प्रसार हुआ है, जिससे लिंग परीक्षण के उपकरणों का विकास हुआ है एवं इनकी सुलभ उपलब्धता हुई है, परिणामस्वरूप बालिका भ्रूण हत्या की दर में वृद्धि हुई है। वैश्वीकरण के प्रभावस्वरूप उद्योग एवं संचार साधनों का तीव्र विकास हुआ जिससे पर्यावरण प्रदूषण सम्बन्धी नवीन समस्याओं का उद्भव हुआ है जिसका महिलाओं के स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है तथा महिलाओं में ब्रेस्ट कैंसर व गर्भाशय कैंसर जैसी बीमारियों में वृद्धि हुई है।

वैश्वीकरण ने वैश्विक गतिशीलता में वृद्धि की है। विदेशों में रोजगार एवं शैक्षणिक अवसरों की उपलब्धता के कारण भारतीय महिलाओं का विदेश में प्रवास और विदेशी संस्कृति के अनुकरण में वृद्धि हुई है। परिणामस्वरूप महिलाओं में पहचान संकट और उससे जुड़ी नवीन समस्याओं का उद्भव हुआ है। वैश्वीकरण के प्रभाव स्वरूप पर्यटन उद्योग का तेजी से विकास हुआ है जिससे Sex tourism जैसी समस्याओं का उद्भव हुआ है एवं महिलाओं के शोषण में वृद्धि हुई है।

भारतीय शिक्षा व्यवस्था पर वैश्वीकरण के प्रभाव (Effects of Globalization on Indian Education System)

संस्कृति का ज्ञान ही शिक्षा है। शिक्षा का तात्पर्य सामान्यतः मनुष्य को सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक आदि सभी पक्षों के बारे में ज्ञान प्रदान करके उसका सर्वांगीण विकास करना है, जिससे वह समाज का प्रकार्यात्मक (Functional) सदस्य बन सके।

भारतीय शिक्षा व्यवस्था पर वैश्वीकरण के प्रभावों के विश्लेषण हेतु वैश्वीकरण से पूर्व भारतीय शिक्षा व्यवस्था के स्वरूप को जानना आवश्यक हो जाता है। अंग्रेजी शासन से पूर्व भारत में धर्म आधारित शिक्षा का प्रचलन था और शिक्षा के क्षेत्र में लिंग, जाति, वर्ग आदि के आधार पर असमानता व्याप्त थी। अंग्रेजी शासन काल में आधुनिक शिक्षा प्रणाली का प्रारम्भ होता है, परन्तु इस काल में भी शैक्षिक असमानता यथावत बनी रहती है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् आधुनिक भारत के विकास के लक्ष्य को निर्धारित किया जाता है और इस लक्ष्य की प्राप्ति हेतु आधुनिक शिक्षा के प्रचार-प्रसार पर बल दिया जाता है।

इस क्रम में सरकार द्वारा प्राथमिक एवं माध्यमिक स्तर पर निःशुल्क शिक्षा की व्यवस्था की जाती है। तकनीकी एवं व्यवसायिक शिक्षा की मांग कम थी, फलतः इनका प्रसार भी कम हुआ तथा यह मुख्यतः सरकारी क्षेत्र तक सीमित था। प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा के क्षेत्र में मिशनरियों एवं निजी क्षेत्र की भी महत्वपूर्ण भूमिका थी, परन्तु इनकी संख्या सीमित थी। अभी भी शिक्षा के क्षेत्र में लैंगिक आधार पर, जातीय आधार पर, जनजातीय आधार पर व ग्रामीण-नगरीय आधार पर असमानता व्याप्त थी।

वैश्वीकरण ने भारतीय शिक्षा व्यवस्था को व्यापक रूप से प्रभावित किया है। इसके प्रभावों के बेहतर विवेचन हेतु भारतीय शिक्षा व्यवस्था के विभिन्न भागों पर इसके विशिष्ट प्रभावों की चर्चा आवश्यक हो जाती है। इस क्रम में हम सर्वप्रथम प्राथमिक शिक्षा व्यवस्था पर वैश्वीकरण के प्रभावों की चर्चा करते हैं।

वैश्वीकरण ने प्राथमिक शिक्षा व्यवस्था को सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों ही रूपों में प्रभावित किया है। यदि इसके सकारात्मक प्रभावों की चर्चा करे तो हम देखते हैं कि वैश्वीकरण के प्रभावस्वरूप FDI के अर्न्तप्रवाह में वृद्धि हुई है तथा प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र में निजी शिक्षण संस्थाओं का तेजी से प्रसार हुआ है, इस प्रकार गुणवत्तापूर्ण प्राथमिक शिक्षा का प्रचार-प्रसार हुआ है।

वैश्वीकरण के प्रभावस्वरूप वैश्विक लक्ष्यों की प्राप्ति के दबाव में वृद्धि हुई है तथा प्राथमिक शिक्षा के सार्वभौमिकरण के लक्ष्य पर बल दिया जाने लगा है। फलतः सरकार, स्वयंसेवी संगठनों तथा अंतर्राष्ट्रीय संगठनों द्वारा प्रयासों में तेजी आयी है तथा प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र में सुधार हुआ है।

वैश्वीकरण के प्रभावस्वरूप शिक्षा के निजीकरण एवं बाजारीकरण से प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र में प्रतिस्पर्धा में वृद्धि होती है, जिससे गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध करवाने का प्रयास तीव्र हो जाता है। फलतः प्राथमिक शिक्षा के स्तर में सुधार होता है एवं आम व्यक्ति को गुणवत्तापरक प्राथमिक शिक्षा की प्राप्ति होती है।

प्राथमिक शिक्षा पर वैश्वीकरण के उपरोक्त सकारात्मक प्रभावों के साथ इसके कुछ नकारात्मक प्रभावों की भी चर्चा आवश्यक हो जाती है। वैश्वीकरण के प्रभावस्वरूप प्राथमिक शिक्षा के निजीकरण व बाजारीकरण में तेजी आती है। फलतः शिक्षा व्यवस्था महंगी हो जाती है एवं सीमांत और गरीब बच्चे गुणवत्ता परक प्राथमिक शिक्षा से वंचित हो जाते हैं। इस प्रकार शैक्षिक असमानता में वृद्धि होती है।

वैश्वीकरण के प्रभावस्वरूप प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र में निजीकरण व बाजारीकरण की होड़ देखी जाती है। प्राथमिक शिक्षा में दिखावे पर ज्यादा जोर दिया जाने लगता है (वातानुकूलित क्लास रूम, वातानुकूलित परिवहन व्यवस्था) एवं शिक्षा अपने मूल उद्देश्यों से दूर हो जाती है।

वैश्वीकरण के प्रभावस्वरूप भारत में पश्चिमी संस्कृति (Western Culture) एवं मूल्यों का प्रसार हुआ है, जिसका प्रभाव प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र में भी दिखाई देता है एवं प्राथमिक शिक्षा पश्चिमी मूल्यों का वाहक बन जाती है, जिससे बच्चों में परम्परागत भारतीय मूल्यों (Traditional Indian Values) के प्रति लगाव कम हो जाता है। वैश्वीकरण का प्राथमिक शिक्षा पर प्रभावों के विवेचन के पश्चात् हम उच्च शिक्षा पर इसके प्रभावों को देख सकते हैं।

उच्च शिक्षा के क्षेत्र में यदि वैश्वीकरण के सकारात्मक प्रभावों की चर्चा की जाए तो यह देखा जा सकता है कि वैश्वीकरण के प्रभावस्वरूप उच्च शिक्षा के क्षेत्र में निजी शिक्षण संस्थानों का प्रसार तीव्र होता है। इससे प्रतिस्पर्धा में वृद्धि होती है फलतः उच्च शिक्षा के स्तर एवं इसके विकल्पों में वृद्धि होती है।

वैश्वीकरण के प्रभावस्वरूप वैश्विक शिक्षा प्रणाली का प्रसार होता है। इससे सरकारी क्षेत्र के उच्च शिक्षण संस्थानों में वैश्विक स्तर के सुधारों का प्रयास तेज हो जाता है, यथा- विश्वविद्यालयों में प्रवेश हेतु परीक्षा का आयोजन, सेमेस्टर प्रणाली लागू किया जाना आदि। इस प्रकार उच्च शिक्षा की गुणवत्ता में वृद्धि होती है।

वैश्वीकरण के प्रभावस्वरूप लोक कल्याणकारी राज्य (Public Welfare State) कमजोर होता है एवं सरकार द्वारा महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों के अनुदानों में कटौती की जाती है। फलतः सरकारी विश्वविद्यालयों व महाविद्यालयों द्वारा अपने खर्चे के प्रबंधन हेतु Paid course के रूप में कई व्यावसायिक पाठ्यक्रमों की शुरूआत की जाती है और इस प्रकार सरकारी शिक्षण संस्थान भी प्रतिस्पर्धा में शामिल हो जाते हैं। इससे शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार होता है।

उच्च शिक्षा पर वैश्वीकरण के उपरोक्त साकरात्मक प्रभावों के साथ इसके कुछ नकारात्मक प्रभाव भी दृष्टिगत होते हैं। वैश्वीकरण के प्रभावस्वरूप उच्च शिक्षा का निजीकरण एवं बाजारीकरण हुआ, फलतः शिक्षा शुल्क में बढ़ोत्तरी हुई एवं उच्च शिक्षा मंहगी हो गयी। इससे निम्न वर्ग एवं निम्न मध्यम वर्ग उच्च शिक्षा से वंचित हुआ एवं उच्च शिक्षा के क्षेत्र में शैक्षिक असमानता में वृद्धि हुई।

शिक्षा के निजीकरण एवं बाजारीकरण के फलस्वरूप ढेर सारे शिक्षण संस्थानों का विकास हुआ, जिनका मुख्य उद्देश्य अधिकाधिक लाभ अर्जित करना है। अधिकतर संस्थानों द्वारा शिक्षा की गुणवत्ता पर कम ध्यान दिया जा रहा है तथा प्रचार, दिखावा आदि पर अधिक ध्यान दिया जा रहा है, जिससे उच्च शिक्षा की गुणवत्ता में गिरावट आ रही है।

वैश्वीकरण के प्रभावस्वरूप भारत का विश्व के अन्य देशों के साथ अंतरसंबंधों में वृद्धि हुई। इससे भारतीय शिक्षा व्यवस्था का विश्व के अन्य शिक्षा व्यवस्थाओं के साथ सम्पर्क तेज हुआ है और USA तथा यूरोप के शिक्षण संस्थाओं का भारत में प्रवेश की दिशा में प्रयास तीव्र हुए हैं। इससे शैक्षिक असमानता में वृद्धि की संभावना भी बढ़ी है।

उच्च शिक्षा पर वैश्वीकरण के प्रभावों के विवेचन के पश्चात् तकनीकी एवं व्यावसायिक शिक्षा जो आज शिक्षा व्यवस्था का एक महत्वपूर्ण क्षेत्र बन गया है, पर वैश्वीकरण के प्रभावों की विवेचना आवश्यक हो जाती है।

यदि हम तकनीकी एवं व्यावसायिक शिक्षा पर वैश्वीकरण के सकारात्मक प्रभावों की बात करे तो हम देख सकते हैं कि वैश्वीकरण के प्रभावस्वरूप वैश्विक स्तर पर उद्योग धन्धों का तीव्र विकास होता है, जिससे विश्व स्तरीय तकनीकी विशेषज्ञों की मांग में वृद्धि होती है एवं सरकार तथा निजी क्षेत्र के द्वारा

तकनीकी संस्थानों के विकास में तेजी आती है। फलत: तकनीकी शिक्षा का व्यापक प्रसार होता है, तकनीकी शिक्षा के अवसरों में वृद्धि होती है एवं तकनीकी विशेषज्ञों की संख्या में वृद्धि होती है।

वैश्वीकरण के प्रभावस्वरूप तकनीकी शिक्षा के क्षेत्र में भी भारत को वैश्विक प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ा है और भारत के समक्ष अपने तकनीकी शिक्षा के स्तर को विश्वस्तरीय बनाने हेतु दबाव में वृद्धि हुई है। फलत: तकनीकी शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार हुआ है। वैश्वीकरण के प्रभावस्वरूप तकनीकी संस्थानों में वैश्विक मानकों को अपनाया जाने लगा है, जैसे-प्रवेश हेतु एकल प्रवेश परीक्षा आयोजित करने का निर्णय। इससे अधिकाधिक योग्य छात्रों को मौका मिला है।

उपरोक्त सकारात्मक प्रभावों के साथ-साथ वैश्वीकरण के कुछ नकारात्मक प्रभावों की चर्चा भी आवश्यक हो जाती है। वैश्वीकरण के प्रभावस्वरूप तकनीकी शिक्षा क्षेत्र का व्यावसायीकरण तेज हुआ है। जिससे तकनीकी शिक्षा महंगी हो गयी है। फलत: निम्न वर्ग तकनीकी शिक्षा प्राप्त करने से वंचित हो गये है एवं तकनीकी शिक्षा के क्षेत्र में शैक्षिक असमानता में वृद्धि हुई है।

वैश्वीकरण के प्रभावस्वरूप भारत को विश्वस्तरीय तकनीकी शिक्षा उपलब्ध कराने के दबाव में वृद्धि हुई है, जबकि भारत जैसे विकासशील देशों के पास संसाधनों का अभाव है। फलत: वैश्विक प्रतिस्पर्धा में तकनीकी शिक्षा के क्षेत्र में भारत का स्तर अन्य देशों की तुलना में कमजोर प्रदर्शित हुआ है।

वैश्वीकरण के प्रभावस्वरूप आधुनिक तकनीकी शिक्षा का विकास हुआ है। इसके तहत आधुनिक उद्योगों एवं वस्तुओं के निर्माण को ध्यान में रखकर व्यावसायिक शिक्षण संस्थाओं की स्थापना एवं प्रसार पर जोर दिया गया है। फलत: परंपरागत व्यवसायों (लघु एवं कुटीर उद्योगों) से सम्बन्धित शिक्षा प्रणाली का ह्रास हुआ है।

शिक्षा व्यवस्था के अंतर्गत महिला शिक्षा भी एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है। वैश्वीकरण ने इसे भी व्यापक रूप से प्रभावित किया है। महिला शिक्षा पर यदि हम इसके सकारात्मक प्रभावों की विवेचना करे तो हम देख सकते हैं कि वैश्वीकरण के प्रभावस्वरूप वैश्विक लक्ष्यों की प्राप्ति की दिशा में प्रयासों में तेजी आती है, जिससे सरकार द्वारा शिक्षा कार्यक्रमों में बालिका शिक्षा पर विशेष बल दिया जाने लगा और बालिका केन्द्रित कई शिक्षा कार्यक्रमों की शुरूआत की जाती है। (जैसे- कस्तूरबा गाँधी आवासीय विद्यालय, साक्षर बालिका परियोजना, लड़कियों हेतु विद्यालयों में शौचालय की व्यवस्था) फलत: महिला साक्षरता दर में वृद्धि होती है और लिंग आधारित शैक्षिक असमानता (Gender Based Educational Inequality) में कमी आती है।

वैश्वीकरण के प्रभावस्वरूप आधुनिक मूल्यों (Modern Value) का तीव्र प्रसार हुआ है और योग्यता आधारित रोजगार के नवीन अवसरों का सृजन हुआ है तथा पितृसत्तात्मक सामाजिक संरचना कमजोर हुई है और महिलाओं के अधिकारों में वृद्धि हुई है एवं इनकी महत्वाकांक्षा में वृद्धि हुई है। इससे शिक्षा के प्रति महिलाओं की उन्मुखता में वृद्धि हुई है। फलत: महिला शिक्षा के स्तर में सुधार हुआ है।

वैश्वीकरणजनित नवीन अर्थव्यवस्था ने ढेर सारे रोजगारों का सृजन किया है। इससे महिला केन्द्रित रोजगारों (रिसेप्शनिष्ट, सेल्स गर्ल, कॉल सेंटर) की संख्या में वृद्धि हुई है तथा इन रोजगारों की प्राप्ति हेतु महिलाओं की उन्मुखता और इसके लिए शिक्षा की ओर उनकी सहभागिता में वृद्धि हुई है। फलत: महिलाओं के शैक्षिक स्तर में सुधार हुआ है।

उपरोक्त सकारात्मक प्रभावों के साथ-साथ महिला शिक्षा को वैश्वीकरण ने नकारात्मक रूप से भी प्रभावित किया है। वैश्वीकरण के प्रभावस्वरूप शिक्षा के निजीकरण एवं बाजारीकरण में तीव्रता आयी है। फलत: शिक्षा व्यवस्था महंगी हुई है, जबकि अभी भी पितृसत्तात्मक मूल्यों (Patriarchal Values) के निरंतरता के कारण लड़कियों की शिक्षा पर कम खर्च करने की प्रवृत्ति विद्यमान है। परिणामस्वरूप वर्तमान महंगी शिक्षा व्यवस्था में लड़कियाँ उच्च तकनीकी, व्यावसायिक एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लाभ से वंचित हो रही हैं।

वैश्वीकरण का यदि हम जनजातीय शिक्षा पर प्रभावों की चर्चा करें तो वैश्वीकरण के प्रभावस्वरूप संचार साधनों का विकास हुआ है और निजी तथा व्यावसायिक शिक्षण संस्थानों का प्रसार हुआ है। फलत: जनजातियों में भी शिक्षा के प्रति जागरूकता एवं प्रोत्साहन में वृद्धि हुई है, जिससे जनजातियों में शिक्षा के स्तर में सुधार हुआ है।

वैश्वीकरण के प्रभावस्वरूप जनजातीय क्षेत्रों में अंग्रेजी शिक्षा प्रणाली का प्रचलन तीव्र हुआ है, इससे जनजातियों द्वारा आधुनिक अंग्रेजी शिक्षा को अपनाया जा रहा है। फलत: पारंपरिक जनजातीय शिक्षा का ह्रास हो रहा है। वैश्वीकरण का यदि ग्रामीण शिक्षा पर प्रभावों की चर्चा की जाए तो हम देख सकते हैं कि वैश्वीकरण के प्रभावस्वरूप ग्रामीण क्षेत्रों में भी निजी शिक्षण संस्थाओं का प्रसार होता है। जिससे ग्रामीणों को भी बेहतर शिक्षा प्राप्ति के अवसर उपलब्ध हुए हैं एवं ग्रामीण शिक्षा की दर में भी वृद्धि हुई है।

वैश्वीकरण के प्रभावस्वरूप सरकार पर वैश्विक लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु दबाव में वृद्धि हुई है। फलत: सरकार द्वारा विभिन्न शिक्षा कार्यक्रमों (सर्वशिक्षा अभियान, साक्षर भारत) के क्रियान्वयन में तेजी लायी जाती है। फलत: ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा के स्तर में सुधार आता है। वैश्वीकरण के प्रभावस्वरूप आंतरिक अर्थव्यवस्था में सुदृढ़ता आती है तथा ग्रामीण क्षेत्रों में भी व्यावसायिक व तकनीकि शिक्षण संस्थानों की स्थापना होने लगती है। फलत: ग्रामीण क्षेत्र में भी वैज्ञानिक एवं व्यावसायिक शिक्षा का प्रसार होता है।

वैश्वीकरण ने ग्रामीण शिक्षा को नकारात्मक रूप से भी प्रभावित किया है। वैश्वीकरण के प्रभावस्वरूप ग्रामीण गरीबी में

वृद्धि देखी जा रही है, जबकि शिक्षा के बाजारीकरण के कारण तकनीकी एवं व्यावसायिक शिक्षा महंगी हो रही है। फलतः ग्रामीण छात्र गुणवत्तापूर्ण शिक्षा से वंचित हो रहे हैं एवं ग्रामीण नगरीय शैक्षिक असमानता में वृद्धि हो रही है।

वैश्वीकरण के प्रभावस्वरूप आधुनिक अंग्रेजी शिक्षा के महत्व में वृद्धि हुई है, जबकि ग्रामीण क्षेत्र में अभी भी देशी भाषा में शिक्षा का प्रचलन है। फलतः ग्रामीण क्षेत्र की शिक्षा के महत्व में ह्रास हुआ है तथा इसे अनुपयोगी समझा जा रहा है। वैश्वीकरण का भारतीय शिक्षा व्यवस्था पर उपरोक्त क्षेत्रवार प्रभावों के अतिरिक्त कई अन्य प्रभावों को भी हम निम्न रूपों में चर्चा कर सकते हैं-

वैश्वीकरण के प्रभावस्वरूप वैश्विक संस्थाओं (विश्व बैंक, यूनेस्को, यूनिसेफ आदि) द्वारा शिक्षा के प्रचार-प्रसार हेतु अनुदान और विभिन्न प्रयासों में तेजी आती है। इसके प्रभावस्वरूप राष्ट्रीय एवं क्षेत्रीय स्तर पर सरकार द्वारा विभिन्न शिक्षण कार्यक्रमों का निर्माण तथा स्वयंसेवी संस्थाओं (Voluntary Organization) द्वारा भी इस दिशा में सहयोग प्राप्त होता है। फलतः शिक्षा के स्तर में सुधार और शैक्षिक असमानता में कमी आती है।

वैश्वीकरण के प्रभावस्वरूप सूचना एवं संचार साधनों का तीव्र प्रसार हुआ तथा शिक्षा व्यवस्था द्वारा सूचना एवं संचार के साधनों का भरपूर प्रयोग किया जा रहा है (Internet, CD, DVD, TV)। फलतः शिक्षा की सर्वसुलभता हुई और शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार हुआ। परन्तु इसके नकारात्मक प्रभाव भी हुए तथा ग्रामीण क्षेत्रों के बच्चों, जिनकी सूचना एवं संचार साधनों तक पहुँच कम है। शहरी बच्चों से प्रतियोगिता में पिछड़ रहे हैं।

शिक्षा का निजीकरण एवं बाजारीकरण के परिणामस्वरूप अब बाजार की आवश्यकताओं को देखते हुए पाठ्यक्रम का निर्माण हो रहा है, फलतः भारतीय संस्कृति को संपोषित करने वाली मूल्यपरक शिक्षा पाठ्यक्रम से बाहर हो रही है।

भारतीय लोकतंत्र पर वैश्वीकरण के प्रभाव (Effects of Globalization on Indian Democracy)

लोकतंत्र, स्वतंत्रता, समानता एवं सामाजिक न्याय के मूल्यों पर आधारित एक राजनीतिक व्यवस्था है, जहाँ जनता का लिए, जनता के द्वारा शासन किया जाता है। भारतीय लोकतंत्र पर वैश्वीकरण के प्रभावों को स्पष्ट करने हेतु वैश्वीकरण से पूर्व की भारतीय लोकतंत्र की स्थिति को जानना आवश्यक हो जाता है।

परम्परागत रूप से भारतीय राजनीति में उच्च जातियों का वर्चस्व रहा है तथा जातिवाद राजनीति में हावी रहा है। पितृसत्तात्मक व्यवस्था (Patriarchal System) के कारण महिलाओं की राजनीतिक सहभागिता कम रही है। गरीबी एवं आर्थिक विषमता के कारण गरीब एवं वंचित वर्गों की भी राजनीतिक सहभागिता कम रही है। अशिक्षा एवं जागरूकता के अभाव के कारण राजनीतिक शक्तियों का कुछ लोगों के हित में प्रयोग होता रहा है तथा राजनीति में वंशवाद व भाई-भतीजावाद हावी रहा है। धार्मिक रूढ़ियों एवं अंधविश्वास के प्रचलन के कारण धर्म के नाम पर मतों का ध्रुवीकरण हो रहा था तथा राजनीति में अपराधियों की सक्रियता बढ़ रही थी।

भारतीय लोकतंत्र के उपरोक्त चरित्र को वैश्वीकरण ने व्यापक रूप से प्रभावित किया है। भारतीय लोकतंत्र पर वैश्वीकरण का मिला जुला प्रभाव रहा है।

सर्वप्रथम हम वैश्वीकरण के भारतीय लोकतंत्र पर पड़ने वाले सकारात्मक प्रभावों की चर्चा करते हैं। वैश्वीकरण के प्रभाव में आर्थिक सुधार तीव्र हुए, जिससे औद्योगिक एवं सेवा क्षेत्र का विकास हुआ एवं रोजगार के नए अवसर सृजित हुए। फलतः निर्धनता में कमी आयी एवं निम्न मध्यम वर्ग की राजनीतिक सहभागिता में वृद्धि हुई, जिससे लोकतंत्र मजबूत हुआ। वैश्वीकरण ने संचार क्रांति का विकास किया है। आज अधिकतर लोग मोबाइल, फेसबुक, ट्विटर आदि से परिचित हो गए हैं। शिक्षा का भी तीव्र प्रसार हुआ है। फलतः राजनीतिक जागरूकता में वृद्धि हुई है तथा सीमांत समूहों की राजनीतिक सहभागिता में वृद्धि हुई है, जिससे लोकतंत्र मजबूत हुआ है।

वैश्वीकरण ने जिस पहचान के संकट को उत्पन्न किया है, इससे नृजातीय तत्वों (Ethnic Element) के महत्व में वृद्धि हुई है। फलतः विभिन्न नृजातीय तत्वों के प्रतिनिधि के रूप में विभिन्न क्षेत्रीय दलों का उद्भव एवं विकास हुआ है। इस प्रक्रिया में शक्ति का विभिन्न नृजातीय समूहों एवं क्षेत्रीय समूहों में विकेंद्रीकरण हुआ है, जिससे लोकतंत्र मजबूत हुआ है।

वैश्वीकरण की प्रक्रिया में महिलाओं को रोजगार के नए अवसर उपलब्ध हुए तथा लिंग समानता के मूल्यों का प्रसार तीव्र हुआ है। फलतः महिला आन्दोलनों का प्रसार हुआ है एवं महिलाओं की राजनीतिक जागरूकता में वृद्धि हुई है, जिससे महिलाओं की राजनीतिक सहभागिता बढ़ी है एवं लोकतंत्र मजबूत हुआ है।

वैश्वीकरण ने संचार क्रांति एवं शिक्षा में प्रसार के द्वारा राजनीतिक जागरूकता में वृद्धि की है, जिससे राजनीति में भ्रष्टाचार, जातिवाद एवं परिवारवाद की धारणा कमजोर हुई है तथा सामान्य जन की राजनीतिक सहभागिता में वृद्धि हुई है। उदाहरण के रूप में दिल्ली विधानसभा चुनावों में आम आदमी पार्टी के उभार को देखा जा सकता है। इस प्रक्रिया ने लोकतंत्र को मजबूत किया है।

वैश्वीकरण ने शिक्षा एवं तकनीकी ज्ञान का प्रसार किया है जिससे अंधविश्वास एवं रूढ़िवाद कमजोर हुआ है। फलतः धार्मिक आधार पर मतों के ध्रुवीकरण की प्रक्रिया कमजोर हुई और तार्किक आधार पर मतदान की प्रक्रिया का विकास हुआ है। परिणामस्वरूप लोकतंत्र मजबूत हुआ है।

वैश्वीकरण ने संचार साधनों का तीव्र विकास कर राजनीतिक जागरूकता का प्रसार किया है, जिससे क्षेत्रीय समस्याओं की

राष्ट्रीय स्तर पर पहचान संभव हुई है। इन क्षेत्रीय हितों के राष्ट्रीयकरण से लोकतंत्र मजबूत हुआ है।

वैश्वीकरण ने संचार क्रांति एवं शिक्षा आदि का प्रसार किया है, जिसके द्वारा तार्किक एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण तथा आधुनिकता के मूल्यों का प्रसार हुआ है। इस प्रक्रिया में दबाव समूहों एवं सिविल सोसायटी का उद्भव एवं विकास भी तीव्र हुआ है, जिनके माध्यम से क्षेत्रीय एवं राष्ट्रीय जन चेतना (Public Consciousness) का विकास हुआ है तथा शक्ति का विकेंद्रीकरण एवं राजनीतिक सहभागिता में वृद्धि हो रही है। इसने लोकतंत्र को मजबूती प्रदान की।

वैश्वीकरण ने लोगों की गतिशीलता को तीव्र किया है, जिससे अप्रवासी भारतीयों की संख्या में वृद्धि हुई है। अब अप्रवासी भारतीयों को भी मतदान का अधिकार एवं विभिन्न सुविधाएँ उपलब्ध कराई जा रही हैं, जिससे अप्रवासी भारतीयों की राजनीतिक सहभागिता संभव हुई है। इस प्रक्रिया ने लोकतंत्र को मजबूती प्रदान की है।

वैश्वीकरण ने व्यक्तिवाद की भावना का विकास किया है तथा स्थानीय गतिशीलता में भी वृद्धि की है। इस प्रक्रिया में संयुक्त परिवार प्रणाली कमजोर हुई है तथा एकल परिवार प्रणाली मजबूत हुई है। फलतः वोटों का विध्रुवीकरण हुआ है एवं एकल राजनीतिक दलों का प्रभुत्व कमजोर हुआ है। इस प्रक्रिया ने लोकतंत्र को मजबूती प्रदान की है।

वैश्वीकरण ने संचार साधनों का विकास कर इंटरनेट वोटिंग प्रणाली जैसी व्यवस्था का विकास किया है। (गुजरात निकाय चुनाव का उदाहरण) इससे वोटिंग के नवीन विकल्प उपलब्ध हुए हैं, जिससे वोटिंग प्रतिशत में वृद्धि हुई है एवं इससे राजनीतिक सहभागिता में वृद्धि संभव हुई है। इससे लोकतंत्र मजबूत हुआ है।

वैश्वीकरण का भारतीय लोकतंत्र पर उपरोक्त सकारात्मक प्रभावों की चर्चा के पश्चात् अब हम इसके नकारात्मक प्रभावों की चर्चा प्रारम्भ करते हैं। वैश्वीकरण की प्रक्रिया में लोक कल्याणकारी राज्य कमजोर हुआ है। इससे सीमांत व्यक्ति (Marginal Man) की स्थिति और कमजोर हुई है, फलतः इनकी राजनीतिक सहभागिता में भी कमी आयी है, जिससे लोकतंत्र कमजोर हुआ है।

वैश्वीकरण ने पूंजीवादी अर्थव्यवस्था को प्रोत्साहित किया है। इसके तहत बड़े औद्योगिक घरानों के अनुकूल नीतियों का निर्माण किया जा रहा है एवं निम्न वर्गीय समूहों के हितों की उपेक्षा की जा रही है। फलतः आर्थिक विषमता में वृद्धि हुई है एवं निम्न आर्थिक वर्ग की स्थिति और कमजोर हुई है। इससे इस वर्ग की राजनीतिक सहभागिता में कमी आयी है व लोकतंत्र कमजोर हुआ है। वैश्वीकरण ने वैश्विक अर्थव्यवस्था का विकास किया है। इससे प्रत्यक्ष विदेशी निवेश के प्रवाह में तेजी आयी है। परन्तु यह अंर्तप्रवाह मुख्यतः विकसित क्षेत्रों में हुआ है जिससे क्षेत्रीय विषमता में वृद्धि हुई है एवं लोकतंत्र कमजोर हुआ है।

वैश्वीकरण के परिणामस्वरूप प्रत्यक्ष विदेशी निवेश के अंर्तप्रवाह में तो तेजी आयी है पर यह मुख्यतः औद्योगिक व सेवा क्षेत्रों में हुआ है जो नगरों में अवस्थित है। फलतः ग्रामीण-नगरीय विषमता में वृद्धि हुई है। सरकार पर औद्योगिक घरानों एवं नगरीय अभिजनों के दबाव में वृद्धि हुई है फलतः सरकार की नीतियों में किसानों, कृषि श्रमिकों व ग्रामीण हितों की उपेक्षा की जा रही है। इस प्रक्रिया में समानता व सामाजिक न्याय का वाहक लोकतंत्र कमजोर हो रहा है।

वैश्वीकरण ने कुशल श्रमिकों के महत्व में वृद्धि की है इससे कुशल श्रमिकों की स्थिति बेहतर हुई है व अकुशल श्रमिकों की स्थिति खराब हुई है तथा उनका सीमान्तीकरण हुआ है साथ ही राज्य के कल्याणकारी योजनाओं में कटौती हो रही है जिससे इन सीमांत श्रमिकों की स्थिति और बदतर हुई है, फलतः इनका राजनीति से अलगाव और नक्सलीकरण व अपराधीकरण हो रहा है जो लोकतंत्र को कमजोर कर रहा है।

वैश्वीकरण के इस युग में राजनीतिक निर्णयों पर विकसित राष्ट्रों के प्रभाव में वृद्धि हुई है जिससे एक राष्ट्र के रूप में भारत की संप्रभुता कमजोर हुई है तथा सरकारी नीतियों में लोकहितों की उपेक्षा भी की जा रही जो लोकतंत्र को कमजोर कर रहें है। वैश्वीकरण के प्रभावस्वरूप भारत पर वैश्विक संगठनों के दबाव में वृद्धि हुई है, परिणामस्वरूप राष्ट्रीय नीतियों का निर्माण वैश्विक परिप्रेक्ष्य में प्रारम्भ हुआ है जिससे राष्ट्रीय हितों की उपेक्षा हो रही है व लोकतंत्र कमजोर हुआ है।

वैश्वीकरणजनित पहचान के संकट के सामाधान की प्रक्रिया में नृजातीय तत्व के रूप में धर्म के महत्व में वृद्धि हुई है। इस प्रक्रिया में धार्मिक पुनः प्रवर्तनवाद (Religious Revivalism) एवं धार्मिक रूढ़िवाद (Religious Fundamentalism) का विकास हुआ जिससे राजनीति में धर्म के आधार पर वोटों के ध्रुवीकरण का प्रयास तीव्र हुआ व धर्मनिरपेक्षीकरण की प्रक्रिया कमजोर हुई, फलतः लोकतंत्र भी कमजोर हुआ।

वैश्वीकरण ने नगरों में रोजगार के नवीन अवसर उत्पन्न किए जिससे ग्रामीण इलाकों से नगरों की ओर प्रवास तीव्र हुआ। परन्तु अधिकतर प्रवासी ग्रामीण नगरों में मतदाता सूची में सूचीबद्ध होने से वंचित रह जाते है तथा अपने मूल निवास में भी अनुपस्थिति के कारण मतदान नहीं कर पाते, फलतः राजनीतिक सहभागिता कमजोर हुई है जिससे लोकतंत्र भी कमजोर हुआ है।

वैश्वीकरण ने संचार क्रांति का प्रसार किया है, शिक्षा का प्रसार किया है तथा तार्किक एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास किया है जिससे जातीय, धार्मिक व परिवार आदि के आधार पर वोटों का ध्रुवीकरण कमजोर हुआ है तथा मतों का विभाजन हुआ है परिणामस्वरूप सरकार बनाने हेतु स्पष्ट बहुमत का अभाव हुआ है तथा गठबंधन सरकारों का प्रचलन बढ़ा है जिससे सरकारों का स्थायित्व दुष्प्रभावित हुआ है एवं भ्रष्टाचार का प्रसार हुआ है। फलतः सरकार में जनता का विश्वास कमजोर हुआ है। इसने लोकतंत्र को भी कमजोर किया है।

भारतीय राष्ट्र राज्य पर वैश्वीकरण के प्रभाव (Effects of Globalization on the Indian Nation State)

किसी राज्य के लोगों में राज्य के आधार पर विद्यमान मनोवैज्ञानिक जुड़ाव या 'हम' की भावना को 'राष्ट्र' की संज्ञा दी जाती है और राष्ट्र की भावना से युक्त राज्य को राष्ट्र राज्य कहा जाता है।

वैश्वीकरण का भारतीय राष्ट्र राज्य पर प्रभाव का विवेचन हेतु वैश्वीकरण से पूर्व राष्ट्र राज्य के रूप में भारत की स्थिति की चर्चा करना आवश्यक हो जाता है।

अंग्रेजी शासन से पूर्व भारत कई छोटे-छोटे राज्यों में विभक्त था। राज्य व जनता के मध्य हम की भावना से युक्त मनोवैज्ञानिक लगाव का अभाव था फलतः भारत में राष्ट्र राज्य का विकास नहीं हो पाया था। अंग्रेजी शासन काल में भारत में संचार एवं यातायात के साधनों का विकास हुआ अंग्रेजों ने सम्पूर्ण भारत में आधुनिक प्रशासनिक व्यवस्था को लागू करके भारत को एक राज्य के रूप में संगठित किया। अंग्रेजों के विरूद्ध उत्पन्न स्वतंत्रता आन्दोलन की प्रक्रिया में तथा आधुनिक शिक्षा आदि से उत्पन्न राजनीतिक जागरूकता के परिणामस्वरूप भारत के लोगों में राष्ट्र की भावना का विकास हुआ। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् एक संघ के रूप में भारतीय राज्य की स्थापना हुई। एक संविधान, एक कानून, एक सरकार, एकल नागरिकता, लोकतांत्रिक समाजवादी समाज का लक्ष्य और इस दिशा में किए गए प्रयासों के फलस्वरूप एक राष्ट्र राज्य के रूप में भारत की निरंतरता कायम हुई।

वैश्वीकरण की प्रक्रिया ने भारतीय राष्ट्र राज्य को व्यापक रूप से प्रभावित किया। वैश्वीकरण का यह प्रभाव जहाँ कई रूपों में सकारात्मक था वहीं कई क्षेत्रों में इसने भारतीय राष्ट्र राज्य को नकारात्मक रूप से भी प्रभावित किया है। सर्वप्रथम हम यहाँ वैश्वीकरण का भारतीय राष्ट्र राज्य पर पड़ने वाले सकारात्मक प्रभावों की चर्चा करते हैं।

वैश्वीकरण के प्रभावस्वरूप प्रत्यक्ष विदेशी निवेश के अंतर्प्रवाह में वृद्धि हुई जिसने आर्थिक विकास के साथ-साथ औद्योगिक विकास को भी तीव्र किया तथा नगरीकरण में भी वृद्धि की। इस प्रक्रिया में क्षेत्रीय विविधताओं (Regional Diversity) एवं संस्कृतियों का एकीकरण हुआ, परिणामस्वरूप राष्ट्र-राज्य मजबूत हुआ।

वैश्वीकरण ने भारतीय राष्ट्र राज्य की आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ किया है। भारत की सुदृढ़ आर्थिक स्थिति ने राष्ट्रीय सुरक्षा एवं स्थायित्व को मजबूती प्रदान की है और इस प्रकार एक राष्ट्र राज्य के रूप में भारत को मजबूत किया है। वैश्वीकरण के परिणामस्वरूप जो आर्थिक विकास हुआ है उससे कमजोर समूह के लोगों की आर्थिक स्थिति में सुधार आया है। फलतः उनकी राजनीतिक जागरूकता एवं उनकी जनसहभागिता में वृद्धि हुई है जिससे लोकतंत्र एवं राष्ट्र राज्य मजबूत हुआ है।

वैश्वीकरण ने शिक्षा का प्रसार किया है तथा विचारों के अंतर्प्रवाह में वृद्धि की है जिससे लोकतांत्रिक मूल्यों का प्रसार हुआ है। फलतः जनचेतना का विकास हुआ है तथा लोगों में राजनीतिक जागरूकता का विकास हुआ है एवं उनकी राजनीतिक सहभागिता बढ़ी है जिसने भारतीय राष्ट्र राज्य को मजबूती प्रदान की है। वैश्वीकरण की प्रक्रिया ने पहचान के संकट को उत्पन्न कर उसके सामाधान के रूप में नृजातीय पहचान (Ethnic Identity) के तत्वों के महत्व में वृद्धि की है। नृजातीय तत्वों के आधार पर विभिन्न प्रकार के दबाव समूहों एवं क्षेत्रीय दलों के महत्व में वृद्धि हुई है। फलतः केन्द्र की शक्ति का विकेन्द्रीकरण हुआ है एवं नीति निर्माण में विभिन्न दबाव समूहों एवं क्षेत्रीय दलों की भूमिका महत्वपूर्ण हो गयी है, जिससे क्षेत्रीय व सामुदायिक विषमता में कमी आयी है और इस आधार पर उभरने वाले असंतोषों में भी कमी हुई है, परिणामस्वरूप राष्ट्रवाद की भावना सुदृढ़ हुई है।

वैश्वीकरण के प्रभावस्वरूप संचार व यातायात के साधनों का विकास हुआ है तथा रोजगार के नए अवसरों में वृद्धि हुई है। फलतः लोगों की गतिशीलता तीव्र हुई है तथा भारत के अन्दर विभिन्न संस्कृतियों एवं रीजि-रिवाज के अदान-प्रदान से सांस्कृतिक एकीकरण (Cultural Integration) की प्रक्रिया तीव्र हुई है जिसने लोगों में 'हम' की भावना का विकास कर राष्ट्र राज्य को मजबूती प्रदान की है।

वैश्वीकरण के प्रभावस्वरूप संचार साधनों के विकास के साथ-साथ लोकतांत्रिक मूल्यों का प्रसार हुआ है। फलतः सिविल सोसायटी मजबूत हुआ है और विभिन्न जन आन्दोलनों का उद्भव एवं विकास हुआ है। परिणामस्वरूप राष्ट्रीय समस्याओं के समाधान हेतु राष्ट्रीय एकजुटता में वृद्धि हुई है और इस प्रकार राष्ट्र राज्य मजबूत हुआ है।

वैश्वीकरण के प्रभावस्वरूप लोगों में अपने अधिकारों के प्रति जागरूकता में वृद्धि हुई है फलतः मानवाधिकार, शोषण एवं सामाजिक अन्याय सम्बन्धी मुद्दों का वैश्विक मंच पर उठाया जाना संभव हुआ तथा इन समस्याओं के विरूद्ध राष्ट्रीय चेतना का विकास हुआ है। वैश्वीकरण का भारतीय राष्ट्र राज्य पर पड़ने वाले सकारात्मक प्रभावों की चर्चा के पश्चात् इसके नाकरात्मक प्रभावों की चर्चा भी आवश्यक हो जाती है।

वैश्वीकरण की प्रक्रिया में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश के अंतर्प्रवाह में वृद्धि हुई है। परन्तु यह वृद्धि कुछ खास क्षेत्रों तक सीमित रही है (जैसे- गुजरात, महाराष्ट्र आदि)। प्रत्यक्ष विदेशी निवेश का कुछ सीमित क्षेत्रों में केन्द्रीकरण ने क्षेत्रीय असमानता में वृद्धि की है और क्षेत्रवादी प्रवृत्ति का विकास किया है परिणामस्वरूप राष्ट्र राज्य कमजोर हुआ है।

वैश्वीकरण के प्रभावस्वरूप प्रत्यक्ष विदेशी निवेश में वृद्धि हुई जिससे जनजातीय क्षेत्रों में विभिन्न परियोजनाओं का निर्माण तेज हुआ। इस प्रक्रिया में इस क्षेत्र में प्राकृतिक संसाधनों का

तीव्र दोहन प्रारम्भ हुआ एवं जनजातीय संस्कृति भी दुष्प्रभावित हुई। फलतः जनजातीय असंतोष में वृद्धि हुई परिणामस्वरूप विभिन्न क्षेत्रीय आन्दोलनों का उद्भव हुआ एवं नक्सलवाद जैसी समस्याओं का प्रसार हुआ फलतः लोकतांत्रिक विकास कमजोर हुआ एवं राष्ट्र राज्य भी कमजोर हुआ।

वैश्वीकरण ने वैश्विक स्तर पर आर्थिक एवं राजनीतिक एकीकरण की प्रक्रिया को तीव्र कर दिया है फलतः UNO, EU, ASEAN, SARC आदि संगठनों के महत्व में वृद्धि हुई है फलतः राष्ट्रवाद की जगह अंतर्राष्ट्रीयवाद (Internationalism) अधिक महत्वपूर्ण हो रहा है तथा इस प्रकार राष्ट्र राज्य कमजोर हुआ है।

वैश्वीकरण ने विश्व के राष्ट्रों के मध्य पारस्परिक अन्तःनिर्भरता को बढ़ाया है तथा UNO, IMF, WB, WTO आदि के महत्व में वृद्धि की है। फलतः इन वैश्विक संस्थाओं के हस्तक्षेप में भी वृद्धि हुई है तथा भारत की नीतिगत स्वतंत्रता में कमी हुई है तथा राष्ट्र की संप्रभुता कमजोर हुई है। इस प्रक्रिया में राष्ट्र राज्य भी कमजोर हुआ है। वैश्वीकरण जनित पहचान के संकट के समाधान में नृजातीय पहचान के तत्वों के महत्व में वृद्धि हुई है फलतः क्षेत्रवाद, भाषावाद आदि प्रवृत्तियों का विकास हुआ है और विभिन्न अलगाववादी आंदोलनों (नागा, मिजो आदि) का उद्भव हुआ है जिससे राष्ट्र राज्य कमजोर हुआ है।

वैश्वीकरण के प्रभावस्वरूप पाश्चात्य संस्कृति का प्रसार हुआ जिसने परंपरागत धार्मिक क्रिया कलापों पर नकारात्मक प्रभाव डाला है इसके प्रतिक्रिया स्वरूप धार्मिक रूढ़िवाद, धार्मिक कट्टरता एवं सम्प्रदायवाद का विकास हुआ जिसने राष्ट्र राज्य को कमजोर करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

वैश्वीकरण के इस दौर में वैश्विक गाँव की अवधारणा का विकास हुआ है तथा पश्चिमी संस्कृति के तीव्र प्रसार से वैश्विक सांस्कृतिक विविधता कमजोर हुई है। फलतः राष्ट्रीय पहचान भी कमजोर हुई है एवं इस तरह राष्ट्र राज्य भी कमजोर हुआ है।

वैश्वीकरण के प्रभावस्वरूप संचार क्रांति के साथ साइबर वर्ल्ड का विकास हुआ है और लोगों की वास्तविक दुनिया से असामाजिक दुनिया की ओर उन्मुखता बढ़ी है। फलतः सामूहिकता (Collectiveness) कमजोर हुई है एवं व्यक्तिवाद की भावना के प्रसार ने 'हम' की भावना पर आधारित राष्ट्र राज्य को कमजोर किया है।

वैश्वीकरण के साथ विभिन्न प्रकार के उत्पाद एवं विभिन्न प्रकार की सेवाओं के क्षेत्र में विदेशी कम्पनियों का आगमन हुआ है। भारत के लोगों में भारतीय उद्योगपतियों द्वारा उत्पादित समान और भारत सरकार द्वारा दी जा रही सेवाओं के प्रति लगाव में कमी हुई है अर्थात् स्वदेशी उत्पादों के प्रति लगाव में कमी हुई है, फलतः इन आधार पर निर्मित परम्परागत राष्ट्रवाद (Traditional Nationalism) की भावना कमजोर हुई है और इस प्रकार राष्ट्र राज्य भी कमजोर हुआ है।

भारत के श्रमिक वर्ग पर वैश्वीकरण के प्रभाव (Effects of Globalization on the Working Class of India)

वैश्वीकरण का भारतीय श्रमिक वर्ग पर प्रभाव जानने से पूर्व भारतीय श्रमिक वर्ग की संरचना को जानना आवश्यक हो जाता है। भारतीय श्रमिक वर्ग को मुख्यतः दो भागों में बाँटा जा सकता है:-

1. संगठित / औपचारिक क्षेत्र के श्रमिक
2. असंगठित / अनौपचारिक क्षेत्र के श्रमिक

संगठित या औपचारिक क्षेत्र से आशय ऐसे व्यावसायिक संस्था से है जहाँ सदस्यों के कार्यक्षेत्र और स्थिति को निश्चित करके उनके कार्यों, दायित्वों, अधिकारों तथा आपसी सम्बन्धों को स्पष्ट कर दिया जाता है।

इसके अंतर्गत उद्योग धंधे तथा गैर औद्योगिक क्षेत्र के नियमित श्रमिक आते हैं। असंगठित या अनौपचारिक क्षेत्र वे हैं जिनका निर्माण बिना किसी पूर्व योजना के होता है तथा जहाँ श्रमिकों के वेतन, रोजगार की दशाएं, सुरक्षा उत्तरदायित्वों आदि का स्पष्ट प्रावधान नहीं होता है। इस क्षेत्र के श्रमिक किसी श्रम संघ से भी संबंधित नहीं होते हैं।

अनौपचारिक क्षेत्र के अंतर्गत औद्योगिक क्षेत्र में ठेका श्रमिक, अनियमित तथा लघु उद्योग के श्रमिक आते हैं। कृषि श्रमिक तथा दिहाड़ी मजदूर भी इसी के अन्तर्गत रखें जाते हैं। भारत में श्रमिक वर्ग की प्रकृति को जानने के पश्चात् भारत में आर्थिक सुधार एवं वैश्वीकरण के लक्षणें से परिचित होना आवश्यक हो जाता है।

इसके लक्षणों के रूप में हम देख सकते हैं कि भारत में आर्थिक गतिविधियों के नियंत्रण कर्त्ता के रूप में राज्य के महत्व में कमी आ जाती है। निजीकरण अर्थात निजी उद्यमियों को प्रोत्साहन दिया जाता है। व्यापार के क्षेत्र में आयात नीति को प्रोत्साहन दिया जाता है। बहुराष्ट्रीय कम्पनियों को आर्थिक गतिविधियों में व्यापक रूप से महत्व प्राप्त होता है। एक लोक कल्याणकारी राज्य के कार्य क्षेत्र में कमी होती है तथा सार्वजनिक कंपनियों में सरकार द्वारा निजी क्षेत्र के निवेश को मौका दिया जाता है।

उपरोक्त विवेचन के पश्चात् आर्थिक सुधार एवं वैश्वीकरण का भारतीय श्रमिक वर्ग पर प्रभाव का विश्लेषण आवश्यक हो जाता है। वैश्वीकरण ने भारतीय समाज के हर वर्ग को किसी न किसी रूप में प्रभावित किया। भारत का श्रमिक वर्ग जो अपवर्जन का शिकार होकर कई समस्याओं से जूझ रहा था उस पर वैश्वीकरण का मिला-जुला प्रभाव रहा। इस नवीन प्रक्रिया ने जहां इस वर्ग को कई रूपों में फायदा पहुँचाया वहीं कई क्षेत्रों में इस प्रक्रिया के परिणामस्वरूप नुकसान भी उठाना पड़ा है।

सर्वप्रथम हम वैश्वीकरण की प्रक्रिया के फलस्वरूप श्रमिक वर्ग पर पड़ने वाले सकारात्मक प्रभावों की चर्चा करते है। वैश्वीकरण की प्रक्रिया के तहत आर्थिक क्षेत्र में निजी कंपनियों का प्रवेश तीव्रता से हुआ फलतः रोजगार के नवीन अवसरों का

विकास हुआ रोजगार के नवीन अवसर सर्वाधिक सेवा क्षेत्र में उपलब्ध हुए परिणामस्वरूप इस क्षेत्र में श्रमिकों के अनुपात में वृद्धि हुई। इस प्रक्रिया ने श्रम के नवीन क्षेत्रों का प्रसार किया तथा फैशनेबल श्रम में वृद्धि हुई जिससे अभिजन श्रमिकों (Elite Worker) का विकास हुआ तथा श्रमिकों की सामाजिक आर्थिक दशाओं में सुधार हुआ। रोजगार के नवीन अवसरों के विकास से गरीबी रेखा से नीचे रहने वाले श्रमिकों के जीवन स्तर में सुधार आया।

वैश्वीकरण की प्रक्रिया ने उत्पादन में आधुनिक प्रौद्योगिकी के प्रचलन में वृद्धि की तथा इस प्रौद्योगिकी के प्रयोग हेतु कुशल श्रमिकों के अनुपात में वृद्धि हुई। कुशल श्रमिक के रूप में श्रमिकों में मध्यम वर्ग का विकास हुआ। इनके बढ़े हुए वेतन से इनके जीवन स्तर में सुधार हुआ तथा इनके द्वारा उपयोगितावादी संस्कृति (Utilitarian Culture) का भी प्रसार हुआ।

श्रम के विविधीकरण (Diversification of Labor) के फलस्वरूप स्त्री श्रमिकों के अनुपात में भी वृद्धि हुई, फलतः स्त्रियों की प्रस्थिति में सुधार हुआ एवं इनकी आत्मनिर्भरता में वृद्धि हुई। वैश्वीकरण ने श्रम के अंतर्राष्ट्रीयकरण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, फलतः भारतीय श्रमिकों विशेषकर सेवा क्षेत्र के श्रमिकों ने विश्व के विकसित देशों में अपनी सशक्त उपस्थिति दर्ज कर भारतीय प्रतिभा का लोहा मनवाया।

जहाँ श्रमिक वर्ग पर वैश्वीकरण के उपरोक्त सकारात्मक प्रभाव दृष्टिगोचर हुए वहीं इसके कई नकारात्मक प्रभाव भी दृष्टिगोचर हुए जिन्हें हम निम्न रूपों में देख सकते हैं-

वैश्वीकरण के प्रभाव स्वरूप आर्थिक क्षेत्र में राज्य के हस्तक्षेप में कमी आई। श्रम कानूनों में ढील दी गयी। रोजगार के नवीन अवसरों का विकास तो हुआ परन्तु यह विकास मुख्यतः असंगठित क्षेत्र में हुआ और संगठित क्षेत्र में रोजगार के अवसरों में कमी आयी। आज असंगठित क्षेत्र में कार्यरत श्रमिक कुल श्रमिकों का 93% है जबकि संगठित क्षेत्र में रोजगार वृद्धि दर 1983-94 के मध्य जो 1.2% यह 1994-2004 में घटकर 0.53% हो गयी। संगठित क्षेत्र में भी मुख्यतः सार्वजनिक क्षेत्र में रोजगार में कमी विशेष रूप से देखी गयी। 1983-94 में सार्वजनिक क्षेत्र में रोजगार वृद्धि दर जहाँ 1.52% थी वहीं 1994-2004 में यह घटकर 0.03% हो गयी है।

जहाँ रोजगार वृद्धि मुख्यतः असंगठित क्षेत्र में हुई वहीं राज्य के हस्तक्षेप में कमी और श्रम कानूनों में ढील के कारण असंगठित क्षेत्र के श्रमिकों को रोजगार सुरक्षा का अभाव, न्यूनतम वेतन सामाजिक सुरक्षा का अभाव एवं कई रूपों में शोषण का सामना करना पड़ा, फलतः इनके जीवन स्तर में गिरावट संभव हुई।

संगठित क्षेत्र के श्रमिकों पर भी वैश्वीकरण के नकारात्मक प्रभाव दृष्टव्य हुए। निजी एवं विदेशी कंपनियों को प्रोत्साहन देने के लिए राज्य हस्तक्षेप में कमी हुई। श्रम मानकों में ढील दी गयी तथा वैश्विक प्रतिस्पर्धा का सामना करने हेतु श्रमिकों की कल्याणकारी सुविधाओं में कटौती की गयी, वेतन में न्यूनतम वृद्धि हुई, स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति के प्रोग्राम के तहत श्रमिकों के छँटनी एवं इनका ठेका श्रमिक एवं अनियमित श्रमिक के रूप में रूपांतरण हुआ।

वैश्वीकरण ने आधुनिक प्रौद्योगिकी के प्रचलन में वृद्धि कर अकुशल श्रमिकों के महत्व में कमी ला दी। इनका अनियमित एवं ठेका श्रमिक के रूप में रूपांतरण हो गया। इनके रोजगार के अवसर छिन गए, फलतः इनका सीमांतीकरण हो गया एवं इनके जीवन स्तर में गिरावट देखी गयी।

श्रमिक जनसंख्या में कृषि श्रमिकों की जनसंख्या में वृद्धि हुई 1991 में जहाँ इनकी जनसंख्या 7.3 करोड़ थी वहीं 2001 में बढ़कर 10.74 करोड़ तथा 2010 में लगभग 24 करोड़ हो गयी। कृषि क्षेत्र में विकास दर निम्न रहने के कारण मुद्रा स्फीति के सापेक्ष इनकी मजदूरी में कमी आयी। फलतः उनका बाहर की ओर पलायन हुआ जिससे अतिनगरीकरण (Overurbanization) जैसी समस्याओं में वृद्धि हुई तथा जो श्रमिक प्रवास नहीं कर पाए उनका रूझान असामाजिक गतिविधियों की ओर हुआ फलतः नक्सलीकरण जैसी प्रक्रिया में वृद्धि देखी गयी।

वैश्वीकरण के प्रभाव में शिक्षा क्षेत्र का तेजी से निजीकरण हुआ तथा यह पहले की तुलना में काफी महंगी हो गयी। फलतः निम्न श्रमिक वर्ग के बच्चे व्यावसायिक व तकनीकी शिक्षा से वंचित हो गए और इनका अकुशल श्रमिक के रूप में रूपांतरण हुआ फलतः इनके जीवन स्तर में सुधार नहीं हो पाया तथा बेरोजगारी में भी वृद्धि हुई।

वैश्वीकरण के प्रभाव स्वरूप उपभोक्तावादी संस्कृति में प्रसार हुआ जिसका प्रभाव श्रमिक वर्ग पर भी पड़ा। श्रमिकों के महत्वाकांक्षा में वृद्धि हुई एवं इनके तुलनात्मक अभावबोध में भी वृद्धि हुई। अपनी महत्वाकांक्षा की पूर्ति हेतु इन्हें तीव्र प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ा तथा इनके कार्य बोझ में वृद्धि हुई फलतः श्रमिक वर्ग के तनाव व कुंठा में वृद्धि हुई, इनमें शराबखोरी में वृद्धि हुई तथा इनमें मानसिक रोग एवं आत्महत्या की दर में भी वृद्धि हुई।

उपरोक्त विवेचन वैश्वीकरण का भारतीय श्रमिक वर्ग पर पड़ने वाले प्रभाव को स्पष्ट करते हैं। परन्तु भारतीय श्रमिक वर्ग की संरचना विविधीकृत है जिससे इनकी प्रकृति व कार्य दशाएँ व स्थितियाँ भी भिन्न प्रकार की है। अतः वैश्वीकरण का श्रमिक वर्ग पर पड़ने वाले प्रभाव का बेहतर विश्लेषण हेतु श्रमिकों के विभिन्न वर्ग पर पड़ने वाले इसके विशिष्ट प्रभावों की चर्चा आवश्यक हो जाती है।

भारत के कृषि श्रमिकों पर वैश्वीकरण के प्रभाव (Effects of Globalization on the Agricultural Workers in India)

कृषक श्रमिकों पर भी वैश्वीकरण का मिला जुला असर रहा, सबसे पहले हम इसके सकारात्मक प्रभावों की चर्चा करते

हैं। वैश्वीकरण के प्रभाव स्वरूप सभी क्षेत्रों में प्रौद्योगिकी व तकनीकी का उन्नयन हुआ। कृषि क्षेत्र भी इससे अछूता नहीं रहा फलतः कृषि का भी आधुनिकीकरण हुआ जिससे कृषि क्षेत्र में उत्पादन में वृद्धि हुई जिसका लाभ कृषि श्रमिकों को भी हुआ तथा उनकी मजदूरी दर में वृद्धि हुई जिससे उनके जीवन स्तर में सुधार हुआ।

वैश्वीकरण ने बाजार अर्थव्यवस्था को प्रभावी बनाया फलतः कृषि का भी वाणिज्यीकरण हुआ एवं नकदी फसलों के उत्पादन के प्रचलन में वृद्धि हुई जिससे किसानों की आय में वृद्धि हुई जिसका लाभ कृषि श्रमिकों को भी हुआ जिससे उनके जीवन स्तर में सुधार हुआ। वैश्वीकरण ने संचार क्रांति को भी संभव बनाया जिसका असर गाँवों में भी हुआ। गाँवों में आधुनिक संचार साधनों के प्रचलन में वृद्धि से कृषि मजदूरों की सोच, जीवन शैली एवं उपभोग की प्रकृति का भी आधुनिकीकरण हुआ इस प्रक्रिया में कृषि श्रमिकों में जागरूकता का विकास हुआ फलतः ग्रामीण शक्ति संरचना एवं राजनीतिक व्यवस्था में कृषि श्रमिकों की भागीदारी में वृद्धि हुई और उनका राजनीतिक सशक्तिकरण हुआ।

कृषि में आधुनिकीकरण ने कृषि मजदूरों हेतु रोजगार के नवीन अवसरों को भी उत्पन्न किया। जिससे उनकी आय में वृद्धि हुई। परन्तु वैश्वीकरण का कृषि श्रमिकों पर उपरोक्त प्रभाव समरूप प्रकृति के नहीं थे बल्कि यह सकारात्मक प्रभाव भी क्षेत्रीय असंतुलन से परिपूर्ण था अर्थात् यह प्रभाव पंजाब, हरियाणा, महाराष्ट्र और अन्य विकसित राज्यों में अधिक दृष्टिगोचर हुए। कृषि श्रमिकों को वैश्वीकरण ने नकारात्मक रूप से भी प्रभावित किया। यंत्रीकरण में वृद्धि ने कृषि श्रमिकों में बेरोजगारी की वृद्धि कर उनको प्रवास हेतु मजबूर किया तथा उन्हें शहरों में अमानवीय दशाओं का सामना करना पड़ा।

वैश्वीकरण ने जिस उपभोक्तावादी संस्कृति का गाँवों तक प्रसार किया उससे कृषि श्रमिक भी प्रभावित हुए तथा उनके उपभोग स्तर में वृद्धि हुई परन्तु मुद्रास्फीति की तुलना में उनके आय स्तर में वृद्धि नहीं हुई फलतः उनके ऋणग्रस्तता में वृद्धि हुई, आत्महत्या के दर में वृद्धि हुई तथा नक्सली विचारधारा के बहकावे में आकर इनका नक्सलीकरण भी हुआ।

जनजातीय क्षेत्रों में नवीन उद्योगों की स्थापना व खनन प्रोजेक्टों तथा आधारित विकास परियोजनाओं के कारण जनजातियों का विस्थापन हुआ तथा इनकी भूमि का भी हस्तांतरण हुआ परिणामस्वरूप इनका कृषि श्रमिक के रूप में रूपांतरण हुआ। आधुनिक उद्योगों में छँटनी, लघु एवं कुटीर उद्योगों की उपेक्षा, पूंजीवादी खेती का प्रचलन आदि कारणों से कृषि श्रमिकों की संख्या में वृद्धि हुई है। कृषि श्रमिक वर्ग पर वैश्वीकरण का उपरोक्त नकारात्मक प्रभाव भी क्षेत्रीय असंतुलन लिए हुए हैं। बिहार, उड़ीसा, झारखंड, उत्तर प्रदेश तथा मध्य प्रदेश जैसे पिछड़े राज्यों में यह असर ज्यादा दिखाई पड़ता है।

भारत के औद्योगिक श्रमिकों पर वैश्वीकरण के प्रभाव (Effects of Globalization on Industrial Worker in India)

वैश्वीकरण ने भारतीय उद्योग धंधों को व्यापक रूप से प्रभावित किया है परिणामस्वरूप औद्योगिक श्रमिक भी इससे व्यापक रूप से प्रभावित हुए हैं। औद्योगिक श्रमिकों को मोटे तौर पर दो भागों में बाँटकर देखा जाता है। पहले के अन्तर्गत अनौपचारिक या असंगठित क्षेत्र के श्रमिक आते हैं जबकि दूसरे भाग के अंतर्गत संगठित या औपचारिक क्षेत्र के श्रमिक आते हैं।

अनौपचारिक या असंगठित क्षेत्र में कार्यरत श्रमिकों पर वैश्वीकरण के सकारात्मक प्रभावों की चर्चा की जाय तो इस क्षेत्र में निजी उद्यमियों के प्रवेश तथा विकेन्द्रित उत्पादन को बढावा मिला फलतः लघु स्तरीय उद्योगों की संख्या में वृद्धि हुई है तथा रोजगार के विभिन्न क्षेत्रों का उदय हुआ जिससे असंगठित/अनौपचारिक क्षेत्रों में रोजगार के अवसरों में वृद्धि हुई। इस क्षेत्र में रोजगार के अवसरों में वृद्धि होने से इस क्षेत्र में श्रमिकों की संख्या में वृद्धि हुई है। इस क्षेत्र में रोजगार के अवसरों में विस्तार ने श्रमिक वर्ग के आय स्तर को बढ़ाकर उनके जीवन स्तर में सुधार किया है।

अनौपचारिक क्षेत्र के विस्तार ने महिलाओं को रोजगार के अवसर उपलब्ध कराने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। साथ ही यह क्षेत्र उन संगठित क्षेत्र के श्रमिकों को भी रोजगार के साधन उपलब्ध करवाने में महत्वपूर्ण साबित हुआ है जो वैश्वीकरण जनित तीव्र प्रतिस्पर्धा के फलस्वरूप छँटनी ग्रस्त हो जाते हैं। वैश्वीकरण ने अनौपचारिक क्षेत्र को नकारात्मक रूप में भी प्रभावित किया, वैश्वीकरण के प्रभाव में लोक कल्याणकारी राज्य के कार्यक्षेत्र में कमी हुई है तथा श्रम एवं सामाजिक सुरक्षा सम्बन्धी कानूनों में ढिलाई हुई है परिणामस्वरूप अनौपचारिक क्षेत्र में काम करने वाले श्रमिकों के शोषण में वृद्धि हुई है एवं इनका सीमांतीकरण हुआ है।

वैश्वीकरण के प्रभावस्वरूप अनौपचिरिक क्षेत्र के श्रमिकों की महत्वाकांक्षा में वृद्धि हुई है, जबकि आय स्तर में तुलनात्मक रूप से वृद्धि नहीं हो पायी फलतः इनके तुलनात्मक अभावबोध (Relative Diprivation) में वृद्धि हुई, परिणामस्वरूप इनमें कुंठा, शराबखोरी, मानसिक रोगियों की संख्या में वृद्धि हुई है। अनौपचारिक क्षेत्रक ने महिला एवं बाल श्रमिकों को रोजगार के अवसर तो उपलब्ध कराए परन्तु उन्हें न्यूनतम वेतन व सुविधाएँ दी गयी व उनके श्रम का शोषण किया जा रहा है।

वैश्वीकरण ने औपचारिक क्षेत्र के श्रमिकों को भी सकारात्मक व नकारात्मक दोनों ही रूपों में प्रभावित किया है। जहाँ तक इस क्षेत्र के श्रमिकों पर वैश्वीकरण के सकारात्मक प्रभावों की बात है तो वैश्वीकरण के परिणामस्वरूप औपचारिक क्षेत्र का विकास हुआ है। श्रमिकों की कार्य संस्कृति (Work Culture) में सुधार हुआ है तथा उनकी कुशलता में वृद्धि हुई है। फलतः इस क्षेत्र के श्रमिकों की आय में वृद्धि हुई है एवं उनके जीवन

स्तर में सुधार हुआ है। औपचारिक क्षेत्र में भी महिला श्रमिकों के अनुपात में वृद्धि हुई है फलतः इनकी आत्मनिर्भरता में वृद्धि हो रही है एवं इनकी प्रस्थिति में सुधार हो रहा है।

परन्तु वैश्वीकरण ने औपचारिक क्षेत्र के श्रमिकों को नकारात्मक रूप में भी प्रभावित किया है। वैश्वीकरण के परिणामस्वरूप प्रतिस्पर्धा में बने रहने व उत्पाद की गुणवत्ता में सुधार के दबाव के कारण तीव्र मशीनीकरण एवं श्रमिकों की छँटनी हुई फलतः श्रमिकों की बेरोजगारी में वृद्धि हुई एवं इनका ठेका श्रमिक व अनियमित श्रमिक के रूप में रूपांतरण हुआ तथा औपचारिक क्षेत्र में कार्यरत श्रमिकों के अनुपात में कमी हुई।

वैश्वीकरण के दबाव में कल्याणकारी राज्य के महत्त्व में कमी हुई। फलतः श्रमिक संगठन कमजोर हुए तथा श्रमिकों की सामाजिक सुरक्षा दुष्प्रभावित हुई व उनकी स्थिति में गिरावट हुई। वैश्वीकरण के दौर में विश्व बाजार में अपने उत्पाद को प्रतिस्पर्धी बनाए रखने हेतु उत्पादकों को उत्पादन लागत में कमी लाने का दबाव है फलतः इस क्षेत्र के उत्पादकों ने श्रमिकों के कल्याणकारी सुविधाओं में कटौती करना शुरू कर दिया। जिसका दुष्प्रभाव इस क्षेत्र के श्रमिकों को झेलना पड़ रहा है तथा उनकी स्थिति में गिरावट हो रही है व उनके असंतोष में वृद्धि हो रही है।

वैश्वीकरण ने सभी क्षेत्रों के उपभोक्तावादी संस्कृति का प्रसार किया है। औपचारिक क्षेत्र के श्रमिक भी इससे अछूते नहीं हैं। उपभोक्तावादी संस्कृति के प्रसार ने इस क्षेत्र के श्रमिकों की महत्वाकांक्षा में वृद्धि की है, जिसकी प्राप्ति हेतु इनके कार्य बोझ में बढ़ोत्तरी हुई तथा नहीं प्राप्त होने की स्थिति में तुलनात्मक अभावबोध से ग्रस्त हो रहे हैं, फलतः इनके कुंठा व हताशा में वृद्धि हो रही है तथा इससे इनमें मानसिक रोगों तथा आत्महत्या की दर में वृद्धि हो रही है।

भारत की महिला श्रमिकों पर वैश्वीकरण के प्रभाव (Effects of Globalization on the Women Workers in India)

श्रमिक वर्ग में महिला श्रमिकों की अपनी विशिष्ट स्थिति है। चूंकि महिलाओं को भिन्न सामाजिक, आर्थिक व सांस्कृतिक परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है अतः एक श्रमिक वर्ग के रूप में महिला श्रमिकों पर वैश्वीकरण के प्रभाव को स्वतंत्र रूप में जानना आवश्यक हो जाता है। अन्य क्षेत्रों की तरह महिला श्रमिकों पर भी वैश्वीकरण का मिला जुला प्रभाव दिखाई देता है। वैश्वीकरण ने महिला श्रमिक वर्ग को कई मामलों में जहाँ सकारात्मक रूप से प्रभावित कर उनकी स्थितियों में सुधार का वाहक बन गया है वहीं कई मामलों में वैश्वीकरण का महिला श्रमिकों पर नकारात्मक प्रभाव भी दिखाई दे रहा है।

महिला श्रमिकों पर वैश्वीकरण के प्रभावों की विवेचना के क्रम में हम सर्वप्रथम इसके सकारात्मक प्रभावों की चर्चा करते हैं। निजी एवं विदेशी कंपनियों के आर्थिक क्षेत्र में प्रवेश के परिणामस्वरूप रोजगार के नए क्षेत्रों का विकास हुआ, जिनमें स्त्रियों के लिए विशेष अवसर उपलब्ध हुआ। फलतः श्रमिक वर्ग में स्त्री श्रमिकों के अनुपात में वृद्धि हुई जिससे महिला श्रमिकों की आत्मनिर्भरता में वृद्धि हुई है और इनकी प्रस्थिति में सुधार हुआ है। स्त्रियों के आर्थिक आत्मनिर्भरता में वृद्धि के परिणामस्वरूप उनकी महत्वाकांक्षा में वृद्धि हुई है फलतः उनमें राजनीतिक जागरूकता का विकास हो रहा जिससे उनकी राजनीतिक सहभागिता (Political Participation) में भी वृद्धि हुई है, परिणामस्वरूप उनका राजनीतिक सशक्तिकरण हो रहा है एवं उनकी प्रस्थिति में सुधार हो रहा है।

महिला श्रमिकों के आर्थिक आत्मनिर्भरता (Economic Independency) में वृद्धि एवं राजनीतिक सशक्तिकरण के अन्तर्गत उनकी परम्परागत प्रस्थिति में भी सुधार हो रहा है। उनके भूमिका परिवर्तन की प्रक्रिया से उनकी भूमिका संघर्ष में कमी आ रही है और परम्परागत पितृसतात्मकता कमजोर हो रही है। उपरोक्त कारकों के परिमाणमस्वरूप भारतीय समाज में स्त्रियों के प्रति दृष्टिकोण में परिवर्तन हुआ तथा सामुदायिक जीवन के अन्य क्षेत्रों में उनकी सहभागिता में वृद्धि हुई और सम्पूर्ण भारतीय समाज में इनकी प्रस्थिति का उन्नयन (Status upgrade) हुआ।

उपरोक्त सकारात्मक प्रभावों के साथ-साथ वैश्वीकरण में महिला श्रमिकों को नकारात्मक रूप से भी प्रभावित किया है, जिसकी विवेचना हम निम्न रूपों में कर सकते हैं।

वैश्वीकरण के प्रभाव स्वरूप जहाँ संचार साधनों का तीव्रता से विकास हुआ तथा स्त्रियों की आत्मनिर्भरता में वृद्धि के साथ-साथ सामाजिक, शैक्षिक व राजनीतिक जीवन में इनकी सहभागिता में वृद्धि हुई जिसके कई नकारात्मक प्रभाव भी दृष्टिगोचर हुए जैसे-इनकी भूमिका संघर्ष में वृद्धि हुई अर्थात् घरेलू भूमिकाओं एवं कार्यक्षेत्र की भूमिकाओं में प्राथमिकता को लेकर संघर्ष में वृद्धि हुई। बाहरी कार्यक्षेत्र में इनकी सहभागिता में वृद्धि ने पुरुषों के साथ इनके टकराव में वृद्धि की है। उपरोक्त परिस्थितियों में महिला श्रमिकों में तलाक की दर में वृद्धि हुई है, पारिवारिक विघटन में तेजी आयी है, सिंगल पैरेंट फैमली का विकास आदि समस्याओं का उद्भव हुआ है।

वैश्वीकरण ने महिलाओं के लिए रोजगार के अवसर में वृद्धि की है लेकिन यह वृद्धि मुख्यतः असंगठित क्षेत्र में हुई है जैसे- सिले हुए वस्त्र, जूता, खिलौना आदि उद्योग, रिसेप्शनिष्ट, सेल्स गर्ल्स, कॉल सेंटर, सड़क निर्माण, भवन निर्माण, ईंट भट्टा, आदि में हुआ है इन क्षेत्रों में इन्हें न्यूनतम वेतन पर श्रम करना होता है तथा रोजगार व श्रम सुरक्षा के अभाव के कारण इनका शोषण होता है।

वैश्वीकरण ने तीव्र यंत्रीकरण को बढ़ावा देकर कुशल श्रमिकों के रोजगार अवसरों में तो वृद्धि की है परन्तु लघु व कुटीर उद्योगों में तथा अकुशल श्रमिकों के रोजगार अवसरों में कमी की है फलतः अनुसूचित जाति/जनजाति व निम्न वर्ग समूह के अकुशल महिला श्रमिकों की बेरोजगारी में वृद्धि हुई है। परिणामस्वरूप इन महिला श्रमिकों की गरीबी में वृद्धि हुई है

तथा जीवन स्तर में गिरावट हुई है फलत: इनका नक्सलीकरण हुआ है एवं देह व्यापार में भी इनकी संलग्नता में वृद्धि हुई है।

वैश्वीकरण के परिणामस्वरूप राज्य ने श्रम कानूनों में ढिलाई की तथा श्रमिकों की कल्याणकारी सुविधाओं में कटौती हुई परिणामस्वरूप संगठित क्षेत्र में कार्यरत महिला श्रमिकों को छँटनी का सामना करना पड़ रहा है जिससे इनका असंगठित क्षेत्र के श्रमिक के रूप में रूपांतरण (Converson) हो रहा है तथा इनके जीवन स्तर में गिरावट आयी है।

वैश्वीकरण ने पर्यटन उद्योग, मनोरंजन उद्योग, सौन्दर्य उद्योग व सेवा क्षेत्र का विकास किया है तथा उपभोक्तावादी संस्कृति का प्रसार किया है फलत: इन क्षेत्र में कार्यरत श्रमिकों के देह, सौन्दर्य व कामुकता का दोहन होने लगा व स्त्री का एक बिकाऊ वस्तु के रूप में रूपांतरण हो रहा है।

कॉल सेंटर, सेल्स गर्ल, रिसेप्शनिष्ट आदि के रूप में कार्यरत स्त्री श्रमिकों को थकाऊ दशाएँ (अधिक समय तक कार्य, देर रात में कार्य, असुरक्षित वातावरण में कार्य) में न्यूनतम वेतन में कार्य करना पड़ता है जबकि उपभोक्तावादी संस्कृति का इनमें तेजी से प्रसार हुआ है जिसने इनकी महत्वाकांक्षाओं में तीव्र वृद्धि कर दी है फलत: इनके तनाव एवं कुंठा में वृद्धि हुई है परिणामस्वरूप महिला मानसिक रोगियों की संख्या में वृद्धि हुई है तथा कार्यस्थल पर इनके यौन शोषण में वृद्धि व देह व्यापार के क्षेत्र के रूप में इनका प्रवेश जैसी घटनाओं में वृद्धि हुई है।

वैश्वीकरण के परिणामस्वरूप वैश्विक बाजार का विकास हुआ व पर्यटन उद्योग का तेजी से विकास हो रहा है। पर्यटन उद्योग के विकास ने Sex tourisum जैसी विकृतियों में भी तेजी ला दी है, जहाँ महिला देह को व्यापार की वस्तु के रूप में देखा जाता है। वैश्वीकरण के उपरोक्त सभी प्रभावों ने महिला श्रमिकों को व्यापक रूप से प्रभावित किया है तथा उनमें अकेले रहने की प्रवृत्ति का विकास हो रहा है, लिव-इन-रिलेशनशिप, समलैंगिकता जैसी नवीन प्रवृत्तियों का विकास और परंपरागत भारतीय संस्कृति के सन्दर्भ में स्त्री से सम्बन्धित नैतिक मूल्यों का क्षरण हो रहा है।

भारत में बालश्रम पर वैश्वीकरण के प्रभाव (Effects of Globalization on Child Labor in India)

वैश्वीकरण की प्रक्रिया ने भारतीय समाज के सभी क्षेत्रों को किसी न किसी रूप में प्रभावित किया है। जहाँ तक बाल श्रम का सवाल है, वैश्वीकरण का इस पर मिला-जुला प्रभाव रहा है। जहाँ एक तरफ इसके कई नकारात्मक प्रभाव दृष्टिगोचर हुए है वहीं इसके कई सकारात्मक प्रभाव भी दृष्टिगोचर हुए है जिसकी चर्चा हम निम्न रूपों में कर सकते हैं। वैश्वीकरण की प्रक्रिया ने आधुनिक शिक्षा का प्रचार प्रसार किया है साथ ही संचार साधनों के विकास में सहायक होकर इसे जन-जन तक पहुँचाने का भी कार्य किया है, इसके माध्यम से विभिन्न संगठनों द्वारा चलाए जाने वाले बाल श्रम विरोधी अभियानों के फलस्वरूप लोगों की जागरूकता में वृद्धि हुई है फलत: बाल श्रम में कमी आयी है।

वैश्वीकरण के प्रभावस्वरूप मानवाधिकार के रक्षा हेतु सक्रिय अंतर्राष्ट्रीय संगठनों के दबाव में भी वृद्धि हुई है। विकसित देशों की जनता, जो बाल श्रम जैसे मुद्दों पर अधिक जागरूक हो चुकी है, अपने देश में यह दबाव बनाने में सफल हुई है कि विकासशील देशों से व्यापार के क्रम में उन वस्तुओं के आयात पर प्रतिबंध लगाया जाए जिसमें बाल श्रम का उपयोग हुआ है। परिणामस्वरूप भारत जैसे विकासशील देशों में उत्पादन प्रक्रिया (Production Process) में बाल श्रम से बचने का प्रयास किया जा रहा है।

वैश्वीकरण ने सिविल सोसायटी के उद्भव को भी गति प्रदान की है तथा इनके द्वारा बच्चों के अमानवीय दशाओं (Inhuman Condition) के विरोध में सरकार पर दबाव दिया जा रहा है। फलत: सरकार द्वारा विभिन्न कानूनों एवं अधिकारों को लागू करने में तत्परता दिखाई जा रही। इसी का परिणाम है कि आज शिक्षा का अधिकार, मध्याह्न भोजन कार्यक्रम, निजी विद्यालयों में गरीब बच्चों को आरक्षण, खाद्य सुरक्षा अधिनियम लागू किए जा रहे हैं फलत: बच्चों में स्कूल जाने की प्रेरणा बढ़ी है और बाल श्रम में कमी आयी है।

वैश्वीकरण के प्रभाव में स्वयंसेवी संगठनों की भूमिका में भी वृद्धि हुई है और इन संगठनों द्वारा बाल श्रम उन्मूलन (Elimination of Child Labor) की दिशा में चलाए जा रहे अभियानों का भी सकारात्मक परिणाम दृष्टिगोचर हो रहा है तथा बाल श्रम के विरोध में जागरूकता बढ़ रही है व बाल श्रम में कमी आयी है।

आर्थिक सुधार एवं वैश्वीकरण की प्रक्रिया ने योग्यता आधारित रोजगार के नए अवसरों को उत्पन्न किया है, जिससे उर्ध्वमुखी सामाजिक गतिशीलता में वृद्धि हुई है इससे निम्न वर्गीय लोगों के जीवन में सुधार हुआ है जिसका असर बाल श्रम पर भी हुआ है व बाल श्रम में कमी आयी है। संचार क्रांति ने उपभोक्तावादी संस्कृति के प्रसार से लोगों की महत्वाकांक्षाओं में तो वृद्धि की ही है वहीं अभिभावकों की जागरूकता में भी वृद्धि हुई है, फलत: अभिभावकों में बच्चों को शिक्षा हेतु भेजने के लिए प्रेरणा मिली है फलत: बाल श्रम में कमी आई है।

परन्तु उपरोक्त विवेचन बाल श्रम पर वैश्वीकरण के पड़ने वाले प्रभावों के एक ही पहलू को दर्शाते है। वैश्वीकरण के बाल श्रम पर कई नकारात्मक प्रभाव भी देखे जा सकते हैं। वैश्वीकरण के प्रभावस्वरूप वैश्विक स्तर पर अर्थव्यवस्थाओं के एकीकरण की प्रक्रिया तीव्र हुई है। वैश्विक प्रतिस्पर्धा ने घरेलू उत्पादकों पर लागत कम करने के दबाव को बढ़ाया है उत्पादन लगात कम करने हेतु सस्ते श्रम की माँग बढ़ी है जिसकी आपूर्ति बालश्रम के द्वारा की जा रही फलत: बालश्रम में वृद्धि हुई है।

आज भारत में विदेशी निवेश को आकर्षित करने की होड़ मची है। FDI के आगमन से मजदूरी में सुधार हुआ है। यह बढ़ी

हुई मजदूरी अभिभावकों को अपने बच्चों को बालश्रम के रूप में भेजने हेतु प्रेरक बल का कार्य कर रहा है तथा उत्पादकों पर सस्ते श्रम हासिल करने का दबाव है फलतः बालश्रम में वृद्धि देखी जा रही है। आर्थिक सुधार व वैश्वीकरण के परिणामस्वरूप कुशल श्रम के माँग में वृद्धि हुई है फलतः अकुशल श्रमिकों के महत्व में कमी आई है परिणामस्वरूप अकुशल श्रमिकों का सीमांतीकरण हुआ है तथा उनमें गरीबी, ऋणग्रस्तता आदि समस्याओं में वृद्धि हुई है जिसके दबाव में अभिभावकों द्वारा अपने बच्चों को बालश्रमिक के रूप में शामिल करने की प्रक्रिया में तीव्रता आयी है।

आर्थिक सुधार व वैश्वीकरण की प्रक्रिया ने आर्थिक विषमता में वृद्धि की है साथ ही राज्य द्वारा सब्सिडी में भी भारी कटौती की जा रही है जिससे दैनिक वस्तुओं की कीमत में वृद्धि हुई है फलतः गरीबों द्वारा अपनी दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु बालश्रम की ओर उन्मुखता बढ़ी है। वैश्वीकरण ने उपभोक्तावादी संस्कृति का प्रसार कर लोगों में भौतिक सुख साधनों की प्राप्ति की महत्वाकांक्षा में वृद्धि की है। लोग किसी भी प्रकार से अपनी भौतिक सुविधाओं को प्राप्त कर लेना चाहते हैं जिसकी परिणति बालश्रम में वृद्धि के रूप में हुई है।

वैश्वीकरण ने श्रम की विविधता को बढ़ाया है और ढेर सारे ऐसे कार्यों को उत्पन्न किया है जिसके लिए बाल श्रमिकों की मांग बढ़ी है फलतः इस मांग को पूरा करने के लिए बाल श्रम की आपूर्ति बढ़ी है और बालश्रम के आकार में वृद्धि हुई है।

वैश्वीकरण की प्रक्रिया में लोक कल्याणकारी राज्य कमजोर हुआ है तथा श्रम सुरक्षा मानक ढीले हुए हैं फलतः बालश्रम उन्मूलन के प्रयास कमजोर हुए हैं और बालश्रम में वृद्धि हुई है। वैश्वीकरण के प्रभावस्वरूप शिक्षा व्यवस्था में भी परिवर्तन हुआ फलतः शिक्षा का निजीकरण हुआ एवं शिक्षा व्यवस्था मंहगी हुई साथ ही सरकारी शिक्षा व्यवस्था के स्तर में गिरावट हुई परिणामस्वरूप वैश्वीकरण ने व्यक्तिवादिता को बढ़ावा देकर परम्परागत पारिवारिक मूल्यों को कमजोर किया है, जिससे बच्चों पर उनके नातेदारों व परिवार का नियंत्रण एवं समर्थन दोनों में कमी आयी है। जबकि उपभोक्तावादी संस्कृति ने बच्चों की जरूरतों को बढाया है (मोबाइल फोन आदि)। फलतः बालश्रम की निरंतरता में वृद्धि हुई है।

वैश्वीकरण की प्रक्रिया ने सिविल सोसायटी, स्वयंसेवी संस्थाओं एवं अंतर्राष्ट्रीय मानवाधिकार संस्थाओं के महत्व में वृद्धि की है। इन संगठनों के दबाव में बाल श्रम उन्मूलन कानून को कठोरता से क्रियान्वयन का प्रयास हो रहा है परन्तु तद्नुरूप पुनर्वास (Rehabilitation) की समुचित व्यवस्था नहीं हो पायी है फलस्वरूप बाल श्रमिकों की स्थिति में गिरावट देखी जा रही है। वैश्वीकरण ने मंहगाई के स्तर को बढ़ाया है जबकि मुद्रा स्फीति की तुलना में मजदूरी दर में अपेक्षाकृत वृद्धि नहीं हुई है। फलतः बाल श्रमिकों के पोषण व स्वास्थ्य स्तर में गिरावट आई है व बाल श्रमिकों की स्थिति दयनीय हुई है।

भारत के किसान वर्ग पर वैश्वीकरण के प्रभाव (Effects of Globalization on the Peasant Class of India)

वैश्वीकरण के ऐजेंडों को वैश्विक स्तर पर प्रसार करने में जिन संस्थाओं ने अहम भूमिका निभाई है उसमें विश्व व्यापार संगठन (WTO) सर्वप्रमुख रहा है। विश्व व्यापार संगठन ने वैश्विक स्तर पर विभिन्न राष्ट्रों के मध्य व्यापार सम्बन्धी बाधाओं को दूर करने का प्रयास किया है। विश्व व्यापार संगठन (WTO) के उरूग्वे दौर की वार्ता के बाद आर्थिक सुधार के तहत तीन मुद्दों को शामिल किया गया था।

सर्वप्रथम इसके तहत घरेलू बाजार में विदेशी कंपनियों के प्रवेश को आसान बनाने की बात शामिल की गयी। द्वितीय इसके तहत कृषि को दिए जा रहे घरेलू समर्थन को समाप्त करने की बात की गयी तथा तृतीय मुद्दा कृषि निर्यात सहायता को कम करने से सम्बन्धित था। उपरोक्त समझौते के तहत भारत के कृषि नीति में निम्न मुद्दों पर बल दिया गया–

राज्य द्वारा कृषि क्षेत्र को दी जा रही सब्सिडी में कटौती की गयी तथा कृषि क्षेत्र में राज्य के निवेश में कमी करने का प्रयास प्रारम्भ हुआ। इसके साथ ही कृषि क्षेत्र में निजी क्षेत्र के निवेश को प्रोत्साहन दिया जाने लगा। साथ ही कृषि उत्पाद और इससे संबंधित वस्तुओं के अंतर्राष्ट्रीय व्यापार को प्रोत्साहन दिया जाने लगा। कृषि का अधिकाधिक आधुनिकीकरण किया जाने लगा, इसमें कृषि का यंत्रीकरण, कृषि का विविधिकरण, उन्नत बीज, उर्वरक एवं कीटनाशक का प्रयोग, कृषि से संबंधित नवीन खोज एवं अनुसंधान कार्यों का संपादन, पौधे संरक्षण, मृदा संरक्षण आदि पर जोर दिया गया, किसान कॉल सेंटर, ई-चौपाल जैसी कई अन्य सुविधाओं की स्थापना की गयी।

वैश्वीकरण की प्रक्रिया के तहत किए गए उपरोक्त प्रयासों ने किसान वर्ग को व्यापक रूप से प्रभावित किया। यह प्रभाव सकारात्मक व नकारात्मक दोनों रूपों में दिखाई दिए। यदि हम वैश्वीकरण का भारतीय किसान वर्ग पर सकारात्मक प्रभाव की चर्चा करे तो यह कहना होगा कि वैश्वीकरण ने कृषि के आधुनिकीकरण एवं कृषि क्षेत्रों में नवीन प्रयोगों को बढ़ावा दिया फलतः प्रति हेक्टेयर उत्पादकता में वृद्धि हुई। 1991 में चावल की प्रति हेक्टेयर उत्पादकता 1740 किग्रा व गेहूँ की प्रति हेक्टेयर उत्पादकता 2251 किग्रा थी वहीं 2010 में चावल की प्रति हेक्टेयर उत्पादकता बढ़कर 2208 किग्रा व गेहूँ की प्रति हेक्टेयर उत्पादकता बढ़कर 2940 किग्रा हो गयी तथा कृषि भूमि के क्षेत्रफल में भी पर्याप्त वृद्धि हुई।

कृषि उत्पादकता में वृद्धि एवं कृषि भूमि के क्षेत्रफल में वृद्धि के फलस्वरूप किसानों की आय में वृद्धि हुई और उनके जीवन स्तर में सुधार हुआ। किसान वर्ग के शिक्षा का स्तर, उपभोग के स्तर, आयु प्रत्याशा, आवास के स्तर, स्वास्थ्य के स्तर आदि में भी सुधार हुआ। वैश्वीकरण ने कृषि उत्पादों के व्यापारीकरण को बढ़ावा दिया फलतः कृषि क्षेत्र में नगदी खेती, बागानी खेती,

ठेके पर खेती जैसी नवीन प्रवृत्तियों का विकास हुआ जिससे कृषि कार्य लाभकारी हो गया। इससे जेन्टलमैन किसानों के वर्ग का विकास हुआ। ग्रामीण समाज में मध्यम वर्ग के आकार में वृद्धि हुई जो परम्परागत रूप से उच्च जातियों से सम्बन्धित न होकर मुख्यत: मध्य स्तर की जातियों से सम्बन्धित है।

कृषि के आधुनिकीकरण से किसानों के जीवन स्तर में सुधार हुआ साथ ही वैश्वीकरण से ग्रामीण क्षेत्रों में भी संचार क्रांति का प्रसार हुआ। इन सबके प्रभाव स्वरूप गांव के किसानों में भी तार्किक एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास हुआ तथा इनके जीवन में धर्म के प्रभाव में कमी आई व परम्परागत रूढ़िगत मान्यताएँ (Traditional Orthodox Beliefs) कमजोर हुई। फलत: परम्परागत जातीय असमानताओं (Traditional Caste Inequality) में कमी आयी, महिलाओं की प्रस्थिति में सुधार हुआ तथा ग्रामीण समाज का आधुनिकीकरण संभव हुआ।

कृषि क्षेत्र की तुलना में गैर कृषि क्षेत्र का विकास तीव्रता से हुआ फलत: इन क्षेत्रों में रोजगार के नवीन अवसर तेजी से विकसित हुए। इन अवसरों का लाभ लेने हेतु किसान वर्ग की देश के अन्य क्षेत्र में प्रवास की दर बढ़ी तथा इससे उनके लिए आय के नवीन स्रोतों का विकास संभव हुआ फलत: उनके जीवन स्तर में सुधार संभव हुआ। परन्तु वैश्वीकरण ने किसान वर्ग को सिर्फ सकारात्मक रूप से ही प्रभावित नहीं किया अपितु इसके कई नकारात्मक प्रभावों का भी किसान वर्ग को सामना करना पड़ रहा है।

वैश्वीकरण के प्रभावस्वरूप विश्व व्यापार संगठन के निर्देशों के अनुरूप राज्य द्वारा कृषि को दिए जा रहे समर्थन में कमी की जा रही है तथा कृषि के क्षेत्र में राज्य के निवेश में भी कमी की जा रही है। 1991 में कृषि क्षेत्र में राज्य का निवेश 1.92% था जो 2002 में घटकर मात्र 1.28% रह गया, जिससे कृषि से संबंधित संरचनात्मक सुविधाओं का विकास उपेक्षित हो गया। फलत: 1991 के बाद से कृषि क्षेत्र में सकल घरेलू उत्पाद की संवृद्धि दर में गिरावट देखी गयी है जिससे बढ़ती जनसंख्या के अनुपात में कृषि उत्पादन के क्षेत्र में उपलब्धियाँ घटी है और भारतीय किसानों के जीवन स्तर में अपेक्षित सुधार नहीं हो पाया है।

वैश्वीकरण के दौर में कृषि उत्पादों के निर्यात में भी कमी आयी है और कृषि उत्पादों का अंतर्राष्ट्रीय व्यापार भी असंतुलित रहा है। 1990-91 में कुल निर्यात में कृषि निर्यात का हिस्सा 19.1% था जो 2006-07 में घटकर 10.3% हो गया। परिणामस्वरूप कृषि के व्यापारीकरण का अधिकांश भाग विकसित देशों के किसानों को प्राप्त हुआ और भारतीय किसानों पर इसका नकारात्मक प्रभाव पड़ा जैसे-कृषि उत्पादों को मिलने वाला मूल्य लागत खर्च की अपेक्षा कम होने के कारण कई बार किसानों द्वारा फसल को खेतों में छोड़ देना, कपास के मूल्यों को लेकर कपास उत्पादकों द्वारा की गयी आत्महत्याएँ व विभिन्न किसान आंदोलनों का उद्भव तथा उत्तर प्रदेश के गन्ना किसानों की समस्याएँ आदि के रूप में देखा जा सकता है।

कृषि का आधुनिकीकरण तो अवश्य हुआ पर यह असंतुलित रहा और इसका लाभ केवल कुछ क्षेत्रों के किसानों को प्राप्त हुआ फलस्वरूप क्षेत्रिय विषमता में वृद्धि हुई है और नक्सलीकरण जैसी समस्याएँ प्रोत्साहित हुई। वैश्वीकरण के प्रसार के प्रभाव में राज्य द्वारा कृषि सब्सिडी में कटौती की गयी। इससे उन्नत बीज, उर्वरक, कीटनाशक तथा कृषि यंत्र मंहगे हो गए जबकि सस्ते दर पर ऋण उपलब्ध कराने वाली संस्थाओं का अभाव रहा फलत: ग्रामीण गरीबी व बेरोजगारी आदि में वृद्धि हुई। वैश्वीकरण के प्रभाव से कृषि को लाभ तो प्राप्त हुआ परन्तु यह लाभ केवल बड़े किसानों तक सीमित रहा जिससे ग्रामीण समाज में आंतरिक विषमता में वृद्धि हुई व कई राज्यों में जाति संघर्ष की समस्या को उत्पन्न किया।

वैश्वीकरण ने कृषि का आधुनिकीकरण तो किया परन्तु आधुनिक कृषि कार्य मंहगा हो गया। संस्थागत साधनों (सिंचाई साधन, ऋण व्यवस्था, कृषि बीमा, भंडारण व विपणन आदि) के अभाव तथा शिक्षा व जागरूकता का अभाव ग्रामीण गरीबी आदि के परिणामस्वरूप छोटे किसानों में ऋणग्रस्तता की समस्या बढ़ी है तथा उनका सर्वहाराकरण (Proletarianization) हुआ है जिससे उनके प्रवास में वृद्धि हुई तथा आत्महत्या की दर बढ़ी तथा नक्सलीकरण में भी तेजी हुई।

वैश्वीकरण ने विदेशी निवेश में तेजी लाकर विकास की विभिन्न योजनाओं को तीव्रता प्रदान किया है। इन विभिन्न योजनाओं के लिए कृषि भूमि का गैर कृषि कार्य हेतु अधिग्रहण किया जा रहा है परिणामस्वरूप जहाँ एक तरफ कृषि भूमि की कीमतों में तेजी से इजाफा हो रहा जिससे किसान लाभान्वित हो रहे हैं तो दूसरी तरफ विस्थापन के विरोध में नवीन किसान आन्दोलनों का उद्भव हो रहा है तथा अशांति व हिंसा की घटनाएँ बढ़ रही (भट्टा पारसौल, नंदीग्राम आदि) है।

विश्व व्यापार संगठन (WTO) के प्रावधानों के तहत बौद्धिक संपदा अधिकार तथा पेटेंट और कॉपीराइट से सम्बन्धित प्रावधान लागू किए गए परिणामस्वरूप वैश्वीकरण के लाभों से केवल विकसित देश के किसान लाभान्वित हुए और भारत के किसान इसका लाभ प्राप्त करने से वंचित रह गए है। फलत: कृषि विकास असंतुलित रहा है।

वैश्वीकरण का एक प्रभाव यह भी देखा गया की संचार क्रांति की पहुँच ग्रामीण किसान वर्ग तक भी हो गयी। परिणामस्वरूप जहाँ एक तरफ किसानों में उपभोक्तावादी संस्कृति का प्रसार हुआ जिससे ग्रामीण किसानों की जीवनशैली पश्चिमीकृत हुई व परम्परागत संस्कृति का अपघटन हुआ तो दूसरी तरफ इसके प्रतिक्रियास्वरूप भारतीय किसानों की अपनी परम्परागत सांस्कृतिक मान्यताओं, रीति-रीवाज, धर्म आदि के प्रति रूझान में पुन: वृद्धि हुई है, जिसने न केवल सकारात्मक प्रभावों को उत्पन्न किया है बल्कि कई नकारात्मक प्रभावों को भी फलित किया है। जैसे-आधुनिकीकरण की प्रक्रिया बाधित हुई है, खाप

पंचायत जैसे परम्परागत रूढ़ियों में वृद्धि हुई है धार्मिक रूढ़िवाद व धार्मिक पुनःप्रर्वतनवाद जैसी घटनाओं का प्रसार हुआ व धर्मनिरपेक्षीकरण कमजोर हुआ है।

भारतीय मध्यम वर्ग पर वैश्वीकरण के प्रभाव (Effects of Globalization on the Indian Middle Class)

मध्यम वर्ग सफेदपोश, नौकरी पेशा करने वाला वर्ग है, जो वर्ग संरचना में न तो उपर होता है न ही नीचे जैसे-डॉक्टर, इंजीनियर, मैनेजर, वकील, शिक्षक व छोटे व्यापारी इत्यादि। मध्यम वर्ग पर वैश्वीकरण के प्रभावों के विवेचन हेतु वैश्वीकरण से पूर्व की मध्यम वर्ग की स्थिति को जानना आवश्यक हो जाता है। वैश्वीकरण से पूर्व भारत में मध्यम वर्ग का आकार छोटा था यह मुख्यतः सरकारी एवं औद्योगिक क्षेत्र से सम्बन्धित था। मध्यम वर्ग में मुख्यतः ऊँची जातियाँ एवं मध्य वर्गीय जातियाँ ही सम्मिलित थी।

वैश्वीकरण ने भारतीय मध्यम वर्ग को व्यापक रूप से प्रभावित किया है। यहाँ सर्वप्रथम हम भारतीय मध्यम वर्ग पर वैश्वीकरण के सकारात्मक प्रभावों की चर्चा कर रहे हैं। वैश्वीकरण के प्रभाव स्वरूप प्रत्यक्ष विदेशी निवेश के अर्न्तप्रवाह में वृद्धि हुई है जिससे उद्योग एवं सेवा क्षेत्र का तीव्र विकास हुआ है। परिणामस्वरूप कुशल श्रम पर आधारित रोजगार के नए अवसरों का सृजन हुआ है फलतः सफेदपोश नौकरी करने वालों की संख्या में वृद्धि हुई है। इस प्रकार मध्यम वर्ग के आकार में वृद्धि हुई है।

वैश्वीकरण के प्रभाव में उद्योग एवं सेवा क्षेत्र का तीव्र विकास हुआ है जिससे योग्यता आधारित रोजगार के नए अवसरों का सृजन हुआ है। इससे जनजातियों, निम्न जातियों एवं महिलाओं की उर्ध्वगामी गतिशीलता (Upward Mobility) में वृद्धि हुई है अर्थात् इन वर्ग के लोग भी मध्यम वर्ग में शामिल हुए एवं मध्यम वर्ग की संरचना की विविधता में वृद्धि हुई। वैश्वीकरण ने उद्योग व सेवा क्षेत्र का तीव्र विकास कर कुशल श्रमिकों की मांग में वृद्धि की है। परिणामस्वरूप कुशल श्रमिकों के पारिश्रमिक में भी वृद्धि हुई तथा कुशल श्रमिक के रूप में मध्यम वर्ग की आर्थिक स्थिति सुदृढ हुई है मध्यम वर्ग के आय में वृद्धि से उनकी बचत में वृद्धि हुई है तथा देश के पूंजी निर्माण कि प्रक्रिया में मध्यम वर्ग के योगदान में वृद्धि हुई है।

वैश्वीकरण के प्रभावस्वरूप खुली अर्थव्यवस्था का विकास हुआ तथा वैश्विक अंतर्संबंधों में वृद्धि हुई। फलतः विदेशों में कुशल श्रमिकों के रोजगार के अवसरों में वृद्धि हुई एवं श्रम की सहज गतिशीलता के कारण मध्यम वर्ग के उत्प्रवास (Emigration) में वृद्धि हुई परिणामस्वरूप भारत के मध्यम वर्ग में एनआरआई की संख्या में वृद्धि हुई। वैश्वीकरण ने संचार साधनों का विकास कर पाश्चात्य जीवन शैली का प्रसार किया फलतः मध्यम वर्ग के रहन-सहन एवं जीवन शैली का पाश्चात्यकरण एवं अभिजातिकरण (Aristocracy) हुआ।

वैश्वीकरण के प्रभाव में उपभोक्तावाद का प्रसार हुआ है। उपभोक्तावादी संस्कृति को अपनाकर मध्यम वर्ग की महत्वाकांक्षा में वृद्धि हुई है। फलतः इस वर्ग में प्रतिस्पर्धा की भावना तीव्र हुई है जिससे इस वर्ग की आर्थिक समृद्धि में वृद्धि हुई है। मध्यम वर्ग की आर्थिक संवृद्धि में वृद्धि के परिणामस्वरूप मध्यम वर्ग के सामाजिक महत्व में वृद्धि हुई है। फलतः मध्यम वर्ग की भारतीय राजनीति में हस्तक्षेप में वृद्धि हुई है एवं मध्यम वर्ग का राजनीतिक सशक्तिकरण हुआ है।

वैश्वीकरण के प्रभावस्वरूप वैश्विक लक्ष्यों को प्राप्त करने का दबाव तेज हुआ है फलतः सफेदपोश अधिकारी वर्ग के उत्तरदायित्व में वृद्धि हुई है एवं इनकी प्रशासनिक शक्तियों में वृद्धि हुई है। परिणामस्वरूप नीति निर्माण एवं क्रियान्वयन में मध्यम वर्ग की भूमिका सुदृढ हुई है।

वैश्वीकरण के फलस्वरूप धन के महत्व में वृद्धि हुई है। सामाजिक व्यवस्था में जाति स्तरीकरण की जगह वर्ग स्तरीकरण का प्रादुर्भाव हुआ है तथा आर्थिक आधार पर निम्न जातियों का मध्यम वर्ग में सम्मिलन हुआ है। इससे निम्न जातियों के अधिकारों एवं सामाजिक महत्व में वृद्धि हुई है। फलतः इनमें जातिगत मान्यताएँ कमजोर हुई है। इस क्रम में मध्यम वर्ग की जातिगत संरचना कमजोर हुई है।

वैश्वीकरण ने भारतीय मध्यम वर्ग पर केवल सकारात्मक प्रभाव ही नहीं डाले अपितु इसने भारतीय मध्यम वर्ग को नकारात्मक रूप में भी प्रभावित किया है। इसे हम निम्न प्रकार से समझ सकते हैं।

वैश्वीकरण ने संचार क्रांति एवं पश्चिमी जीवन शैली का तीव्र प्रसार किया है। भारतीय मध्यम वर्ग द्वारा इस पश्चिमी जीवन शैली को अपनाने के कारण इनका परंपरागत भारतीय संस्कृति से अलगाव (Isolation) एवं विचलन (Deviation) में वृद्धि हुई है। आज मध्यम वर्ग उपभोक्तावादी संस्कृति को अपनाकर तीव्र व्यक्तिवादिता की ओर उन्मुख हुआ है। फलतः मध्यम वर्ग में सामूहिकता का ह्रास हुआ है तथा अपने रिश्तेदारों, परिवार, मित्र आदि से अलगाव हुआ है तथा फेसबुक, ट्विटर आदि की काल्पनिक साइबर संसार की ओर उन्मुखता बढ़ी है।

वैश्वीकरण के परिणामस्वरूप प्रत्यक्ष विदेशी निवेश का अंतर्प्रवाह तीव्र हुआ। परन्तु मुख्यतः यह शहरों में सीमित रहा। फलतः शहरों में रोजगार के नए अवसरों का सृजन हुआ एवं मध्यम वर्ग की रोजगार की तलाश एवं शहरी चमक दमक के आकर्षण में शहरों की ओर पलायन हुआ। परिणामस्वरूप मध्यम वर्ग का परिवार एवं ग्रामीण परिवेश से अलगाव एवं उनमें एकल परिवार व्यवस्था का विकास हुआ।

वैश्वीकरण के प्रभावस्वरूप संचार क्रांति, आर्थिक विकास एवं उपभोक्तावादी संस्कृति का प्रसार हुआ। फलतः मध्यम वर्ग की प्रतिस्पर्धा में वृद्धि हुई और भाग दौड़ वाली जीवन प्रणाली का विकास हुआ। परिणामस्वरूप इनके जीवन में तनाव व कुंठा में वृद्धि हुई तथा अनेक प्रकार के शारीरिक व मानसिक बीमारियों

के प्रकोप में वृद्धि हुई इससे मध्यम वर्ग की शारीरिक क्षमता का ह्रास हुआ एवं जीवन शैली आधारित बीमारियों (ब्लड प्रेशर, डायबिटीज, हृदय रोग आदि) के प्रचलन में वृद्धि हुई।

मध्यम वर्ग में उपभोक्तावादी पश्चिमी मूल्यों के प्रसार के परिणामस्वरूप इनका परंपरागत मान्यताओं एवं मूल्यों से अलगाव हुआ तथा मध्यम वर्ग के नैतिक स्तर में गिरावट हुई एवं इनमें नैतिक दुर्बलता का विकास हुआ।

वैश्वीकरण ने भौतिक संस्कृति एवं उपभोक्तावादी मूल्यों का प्रसार किया। मध्यम वर्ग इन उपभोक्तावादी मूल्यों को आत्मसात कर भौतिक सुख सुविधाओं के अंधी दौड़ में शामिल हो गया। फलत: इनके जीवन में तीव्र प्रतिस्पर्धा, अत्यधिक कार्य बोझ एवं समय का अभाव हो गया। परिणामस्वरूप मध्यम वर्ग जीवन के मूलभूत पक्षों से अलगावित हो रहा है।

वैश्वीकरण के प्रभावस्वरूप पश्चिमी संस्कृति का प्रसार हुआ है एवं मध्यम वर्ग के समक्ष पहचान का संकट उत्पन्न हुआ है। जिसके समाधान हेतु मध्यम वर्ग की नृजातीय पहचान के तत्वों की ओर उन्मुखता बढ़ी है। फलत: आधुनिक जीवन शैली अपनाने वाला मध्यम वर्ग आज धार्मिक पुन:प्रवर्तनवाद एवं धार्मिक रूढ़िवाद का वाहक बनकर धर्मनिरपेक्षीकरण की प्रक्रिया में बाधक बन गया है।

वैश्वीकरण ने जिस पश्चिमी मूल्यों का प्रसार किया है उसे मध्यम वर्ग ने आगे बढ़कर अपनाया है तथा आर्थिक संवृद्धि को ही अपना प्राथमिक लक्ष्य बना लिया है जिससे मध्यम वर्ग का नैतिक स्तर का ह्रास हुआ है फलत: मध्यम वर्ग में सफेदपोश अपराध एवं भ्रष्टाचार आदि का प्रचलन बढ़ा है। वैश्वीकरण के परिणामस्वरूप जिस उपभोक्तावादी संस्कृति का प्रसार हुआ है उसे अपनाकर मध्यम वर्ग में दिखावा हेतु उपभोग का विकास हुआ है तथा मध्यम वर्ग द्वारा राष्ट्रीय आय का अनुत्पादक कार्यों में व्यय किया जा रहा है, जिससे राष्ट्रीय विकास में बाधा हो रही है।

भारतीय वृद्धों पर वैश्वीकरण के प्रभाव
(Effects of Globalization on Indian Elders)

वैश्वीकरण ने भारतीय समाज के हर वर्ग को व्यापक रूप से प्रभावित किया। भारतीय वृद्धों पर भी वैश्वीकरण के प्रभाव को स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। यह प्रभाव सकारात्मक व नकारात्मक दोनों ही रूपों में दृष्टिगत हुआ है। वैश्वीकरण का भारतीय वृद्धों पर पड़ने वाले सकारात्मक प्रभावों की चर्चा हम निम्न रूप में कर सकते है-

वैश्वीकरण के प्रभावस्वरूप भारतीय समाज में आर्थिक समृद्धि आयी है तथा सभी व्यक्तियों के जीवन स्तर में सुधार आया है जिसका प्रभाव वृद्धों पर भी पड़ा है एवं उनके जीवन स्तर में भी सुधार देखा जा सकता है। वैश्वीकरण के फलस्वरूप विज्ञान एवं तकनीक का प्रसार हुआ है तथा स्वास्थ्य सम्बन्धी सुविधाओं का प्रसार हुआ है फलत: वृद्धों को स्वास्थ्य सम्बन्धी नवीन सुविधाएँ उपलब्ध हो पायी है तथा उनके स्वास्थ्य स्तर में सुधार हुआ है।

वैश्वीकरण के प्रभावस्वरूप स्वयं सेवी संस्थाओं का प्रसार हुआ है। कई स्वयंसेवी संस्थाओं द्वारा वृद्धों के कल्याण हेतु बेहतर प्रयास किए गए है। फलत: वृद्धों के समस्याओं के प्रति लोगों की जागरूकता में वृद्धि हुई है तथा इस प्रकार वृद्धों का कल्याण संभव हुआ है। वैश्वीकरण के प्रभावस्वरूप मनोरंजन के नए साधनों का विकास हुआ है, जैसे-टीवी, इंटरनेट आदि। वृद्ध जो परिवार में अकेलेपन की जिन्दगी व्यतीत कर रहे हैं, उनके लिए मनोरंजन के ये नवीन साधन अकेलेपन से बचने में कारगर साबित हो रहे हैं। वैश्वीकरण के प्रभावस्वरूप धर्म का बाजारीकरण हुआ है इससे विभिन्न धार्मिक चैनलों का प्रसार हुआ है। परिणामस्वरूप वृद्धों को घर बैठे धार्मिक ज्ञान की प्राप्ति संभव हो सकी है।

वैश्वीकरण ने भारतीय वृद्धों पर जहाँ उपरोक्त सकारात्मक प्रभाव पैदा किए वहीं इसके कुछ नकारात्मक परिणाम भी दृष्टिगत हुए हैं जिसे हम निम्न प्रकार से देख सकते हैं-

वैश्वीकरण के प्रभावस्वरूप उपभोक्तावादी मूल्यों का प्रसार हुआ है। लोगों की महत्वाकांक्षा एवं प्रतिस्पर्धा में वृद्धि हुई है फलत: लोगों के पास समय का अभाव हो गया है एवं अकेलेपन की जिन्दगी जीने को मजबूर हो गए हैं। वैश्वीकरण के प्रभाव स्वरूप श्रम की गतिशीलता में वृद्धि हुई है तथा रोजगार के तलाश में लोगों का नए स्थानों पर पालायन हुआ है। परिणाम स्वरूप परिवार में वृद्ध अकेला व उपेक्षित जीवन जीने को मजबूर हुए हैं। वैश्वीकरण के प्रभाव स्वरूप संचार क्रांति का प्रसार हुआ है तथा आधुनिक विचारधारा का प्रसार हुआ है। जिसका प्रचलन मुख्यत: युवा वर्ग में हुआ है जबकि वृद्ध अभी भी परंपरागत विचारधारा के पोषक हैं। फलत: पीढ़ी अंतराल की समस्या में वृद्धि हुई है।

वैश्वीकरण के प्रभावस्वरूप पश्चिमी जीवन शैली का प्रसार हुआ है। वृद्ध लोग अभी भी परंपरागत जीवन शैली के पोषक हैं तथा इन्हें इस नवीन जीवन शैली के साथ सामंजस्य की समस्या पैदा हुई है। वैश्वीकरण के प्रभाव स्वरूप व्यक्तिवादिता में वृद्धि हुई है एवं संयुक्त परिवार व्यवस्था कमजोर हुई है तथा एकल परिवार व्यवस्था का प्रचलन तीव्र हुआ है ऐसे में वृद्ध उपेक्षित एवं अलगावित हुए है। वैश्वीकरण के प्रभावस्वरूप लोक कल्याणकारी राज्य कमजोर हुआ है। फलत: वृद्धों के कल्याण सम्बन्धी योजनाओं के प्रति राज्य की भूमिका कम हुई है एवं वृद्धों की स्थिति में गिरावट हुई है।

वैश्वीकरण के प्रभावस्वरूप भारतीय युवा वर्ग में व्यक्तिवादी पश्चिमी जीवनशैली को अपनाने की होड़ मची है तथा वृद्धों के प्रति उनका आदर-भाव कम होता जा रहा है। परिणामस्वरूप वृद्धों को युवाओं के सामने परिवार की शांति हेतु घुटने टेकने पड़ रहे हैं। वैश्वीकरण के प्रभावस्वरूप उपयोगितावादी मूल्यों का प्रसार हुआ है फलत: उनको ही महत्व प्राप्त हो रहा जिनकी

उपयोगिता (Utility) है। चूंकि वृद्धों की उपयोगिता खत्म मान ली जाती है जिससे उनको महत्वहीन समझा जाता है एवं उपेक्षा की दृष्टि से देखा जाता है।

वैश्वीकरण के प्रभावस्वरूप मनोरंजन के नए साधनों का विकास हुआ है जैसे-टीवी, विडियो गेम, इंटरनेट आदि पहले बच्चे जहाँ मनोरंजन के लिए दादा-दादी एवं नाना-नानी से कहानियाँ सुनते थे एवं उनसे गहरा लगाव का अनुभव करते थे। परन्तु आज के दौर में बच्चे मनोरंजन के नवीन साधनों के प्रति आकर्षित हुए है एवं वृद्धों के प्रति उनका लगाव खत्म हुआ है।

वैश्वीकरण : संभावित प्रश्न

1. भारतीय समाज पर वैश्वीकरण के अंतर्विरोधी प्रभावों को स्पष्ट कीजिए।
2. आज वैश्वीकरण के इस दौर में भारतीय समाज संक्रमणकालीन अवस्था से गुजर रहा है। वर्णित कीजिए।
3. भारतीय समाज एवं संस्कृति पर संचार साधनों के अंतर्विरोधी प्रभावों की चर्चा कीजिए।
4. हाल के वर्षों में विवाह में उत्पन्न नवीन प्रवृत्तियों की वैश्वीकरण के साथ सहसम्बद्धता को स्पष्ट कीजिए।
5. हमारी परम्परागत सामाजिक संस्थाएँ वैश्वीकरण के इस दौर में क्रमिक क्षरण की प्रक्रिया से ग्रसित है, स्पष्ट कीजिए।
6. नागरिक समाज एवं नवीन जन-आन्दोलनों के उद्‌भव में वैश्वीकरण की भूमिका पर चर्चा कीजिए।
7. वैश्वीकरण की प्रक्रिया ने पहचान के संकट को उत्पन्न किया है और भारतीय समाज को परम्परा की ओर उन्मूख किया है। स्पष्ट कीजिए।
8. वैश्वीकरण की प्रक्रिया ने भारतीय महिलाओं को एक तरफ सशक्त किया है तो दूसरी तरफ उन्हें उपभोग की वस्तु के रूप में चित्रित करके उनका दैहिक शोषण को बढाया है। चर्चा कीजिए।
9. वैश्वीकरण की समकालीन प्रक्रिया ने धर्म को एक साथ कमजोर एवं मजबूत दोनों किया है। स्पष्ट कीजिए।
10. वैश्वीकरण ने भारतीय लोकतंत्र को एक साथ कमजोर एवं मजबूत दोनों किया है। चर्चा कीजिए।
11. सोशल नेटवर्किंग साइट्स क्या है? इसके भारतीय जन मानस पर पड़ने वाले प्रभावों की चर्चा कीजिए।
12. वैश्वीकरण ने एक आधुनिक परन्तु अलगावित मानव का निर्माण किया है। स्पष्ट कीजिए।
13. परम्परागत भारतीय लोक-कला एवं लोक-संस्कृति को वैश्वीकरण से अनुरक्षण हेतु उपायों की चर्चा कीजिए।
14. वैश्वीकरणजनित जीवनशैली ने हमारी कार्यशील जनसंख्या की मानसिकता में क्या परिवर्तन उत्पन्न किया है? उत्तर दीजिए।
15. जनजातीय समाज एवं संस्कृति पर वैश्वीकरण के अंतर्विरोधी प्रभावों को समझाइए।
16. धार्मिक पुन:प्रवर्त्तनवाद क्या है? इसकी सामाजिक उपयोगिता पर चर्चा कीजिए।
17. धार्मिक कट्टरतावाद क्या है? इसके दुष्परिणामों की चर्चा कीजिए और इसको रोकने हेतु उपाय सुझाएँ।
18. धर्म का लोगों के जीवन में क्या भूमिका है? वैश्वीकरण के इस दौर में धर्म के स्वरूप में हुए बदलावों की चर्चा कीजिए।
19. Globalization क्या है? क्या यह सिर्फ बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के द्वारा व्यवहृत बाजार की रणनीति है या सांस्कृतिक संश्लेषण की प्रक्रिया है जो हमारे समक्ष अपना स्थान निर्मित कर रहा है।
20. वैश्वीकरण ने किस प्रकार हमारी घरेलू कला तथा साहित्यिक परम्परा एवं ज्ञान के समक्ष समस्या को उत्पन्न किया है? स्पष्ट कीजिए।
21. उपभोग की संस्कृति क्या है? भारतीय समाज पर इसके प्रभावों को स्पष्ट कीजिए।
22. वैश्वीकरण का महिला श्रम तथा बाल श्रम पर पड़ने वाले प्रभावों की चर्चा कीजिए।
23. वैश्वीकरण एवं पहचान के संकट पर एक टिप्पणी लिखिए।
24. वैश्वीकरण की प्रक्रिया ने भारत में सांस्कृतिक संकट को उत्पन्न किया है। टिप्पणी कीजिए।
25. श्रम के स्त्रीकरण से आपका क्या तात्पर्य है? वैश्वीकरण के प्रभावों के संदर्भ में इसको स्पष्ट कीजिए।
26. वैश्वीकरण की प्रक्रिया का भारत के युवा वर्ग पर पड़ने वाले प्रभावों की समीक्षा कीजिए।
27. वैश्वीकरण एवं जनजातीय नृजातीयता से संबंध को दर्शाइए और इसके प्रभावों की समीक्षा कीजिए।

✪✪✪✪✪